CBSE Class 10 Hindi B 2026 Set 3 Question Paper with Solutions

ZOLLEGE

General Instructions

(i) This booklet contains 66 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It comprises 16 single-correct multiple-choice questions.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

विश्व में जल-संकट बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे हर साल करोड़ों लोग प्रभावित होते हैं। गर्मियों में यह संकट और बढ़ जाता है। गाँवों से महानगरों तक पानी के लिए त्राहि-त्राहि मचने लगती है। यह संकट न केवल ग्रामीण और शहरी आबादी के लिए गंभीर चुनौती है बल्कि कृषि पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। लगातार गिरता भू-जल स्तर, जल संसाधनों की बर्बादी, बढ़ती जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन इस संकट को और विकराल बना रहे हैं। अगर समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में स्थिति और गंभीर हो सकती है।

जल-संकट गहराने के कई कारण हैं। हमें पता है कि पानी सीमित है, फिर भी उसे बूँद-बूँद बचाने के बजाए हम उसे व्यर्थ बहा रहे हैं। विश्व की तेजी से बढ़ती आबादी के कारण पानी की माँग बढ़ती जा रही है लेकिन जल संसाधनों का उतनी ही अधिक तेजी से क्षय हो रहा है। कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोग के लिए भू-जल का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है, जिससे भू-जल का स्तर गिरता जा रहा है। नदियों, झीलों और भू-जल में औद्योगिक कचरे, रसायनों और प्लास्टिक के बढ़ते स्तर के कारण पीने योग्य पानी की लगातार कमी आ रही है।

Correct Answer: —

• • •

2. निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यान से पढ़िए और उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : भूमिगत जल के प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ा है।
कारण : जल के विविध स्रोतों को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

(A) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

(B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

(C) कथन गलत है, किंतु कारण सही है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

Correct Answer: (B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

SOLUTION:

Concept:

- चारों विकल्प दो-दो के जोड़े में बँटे हैं, इसलिए केवल एक वाक्य का सही-गलत तय कर लेने से आधे विकल्प तुरंत कट जाते हैं।
- यहाँ कारण वाला वाक्य पहले जाँचना अधिक लाभदायक है।

Step 1: पहले कारण को परखिए।
विकल्प (C) और (D) दोनों कारण को सही मानते हैं। यदि कारण गलत सिद्ध हो जाए तो ये दोनों एक साथ बाहर हो जाएँगे।

Step 2: गद्यांश से कारण की जाँच कीजिए।
गद्यांश साफ कहता है कि पानी सीमित होते हुए भी हम उसे व्यर्थ बहा रहे हैं, और कृषि, उद्योग तथा घरेलू उपयोग के लिए भू-जल का अत्यधिक दोहन हो रहा है।
यह संरक्षण का चित्र नहीं, लापरवाही का चित्र है। कारण गलत है, अतः (C) और (D)

हट गए।

Step 3: बचे हुए दो विकल्पों में निर्णय कीजिए।
(A) कथन को भी गलत मानता है और (B) उसे सही। गद्यांश में औद्योगिक कचरे, रसायनों और प्लास्टिक के बढ़ते स्तर का स्पष्ट उल्लेख है, इसलिए कथन सही है और (A) कट जाता है।

Step 4: उत्तर की पुष्टि कीजिए।
सही कथन के साथ गलत कारण, यही विकल्प (B) कहता है।

Final Answer: (B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

Quick Tip: पहले कारण वाले वाक्य को गद्यांश से मिलाइए। गद्यांश पानी बचाने की बात करता है या पानी बर्बाद करने की, यही देखने से आधे विकल्प कट जाएँगे।

• • •

3. विश्व में पानी की माँग दिनोंदिन क्यों बढ़ रही है?

(A) जलवायु परिवर्तन के कारण
(B) भू-जल के गिरते स्तर के कारण
(C) कृषि योग्य भूमि के विस्तार के कारण
(D) बढ़ती हुई आबादी के कारण

Correct Answer: (D) बढ़ती हुई आबादी के कारण

SOLUTION:

Concept:

- माँग और आपूर्ति दो अलग बातें हैं। प्रश्न में जो शब्द आया है, उसी से तय होता है कि किस ओर देखना है।
- यहाँ 'माँग' शब्द ही उत्तर की दिशा पकड़ा देता है।

Step 1: प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानिए।
प्रश्न है कि पानी की **माँग** क्यों बढ़ रही है। माँग वहीं बढ़ती है जहाँ माँगने वाले बढ़ें।

Step 2: उन विकल्पों को हटाइए जो आपूर्ति से जुड़े हैं।
भू-जल का गिरता स्तर और जलवायु परिवर्तन, दोनों पानी की *उपलब्धता* घटाते हैं। इनसे माँग नहीं बढ़ती, कमी बढ़ती है। अतः (A) और (B) बाहर।

Step 3: बचे हुए दो विकल्पों को गद्यांश से मिलाइए।
कृषि योग्य भूमि के विस्तार की चर्चा गद्यांश में है ही नहीं, जबकि बढ़ती आबादी का उल्लेख सीधे माँग बढ़ने के कारण के रूप में हुआ है।

Step 4: उत्तर पर पहुँचिए।
अधिक लोग, अधिक पीने का पानी, अधिक खेती और अधिक उद्योग, इसलिए माँग बढ़ती है।

Final Answer: (D) बढ़ती हुई आबादी के कारण

Quick Tip: प्रश्न में माँग शब्द पर ध्यान दीजिए। जो विकल्प पानी की उपलब्धता घटाते हैं वे माँग बढ़ाने का कारण नहीं हो सकते।

• • •

4. जल-संकट गहराने के प्रमुख कारण नहीं हैं।

(A) लगातार गिरता भू-जल स्तर

(B) लगातार बढ़ती जनसंख्या

(C) जल स्रोतों का सुनियोजित उपयोग

(D) जल संरक्षण के अनुपयुक्त उपाय

Correct Answer: (C) जल स्रोतों का सुनियोजित उपयोग

SOLUTION:

Concept:

- नकारात्मक प्रश्न में सबसे सरल तरीका यह है कि विकल्पों को दो ढेरों में बाँट दिया जाए, समस्या बढ़ाने वाले और समस्या घटाने वाले।
- जो अकेला दूसरे ढेर में जाएगा, वही उत्तर है।

Step 1: विकल्पों को दो ढेरों में बाँटिए।
गिरता भू-जल स्तर, बढ़ती जनसंख्या और संरक्षण के अनुपयुक्त उपाय, ये तीनों समस्या को **बढ़ाते** हैं।
जल स्रोतों का सुनियोजित उपयोग समस्या को **घटाता** है।

Step 2: बेमेल विकल्प पहचानिए।
अकेला विकल्प (C) दूसरे ढेर में जाता है, इसलिए वही उत्तर है।

Step 3: शब्द पर ध्यान दीजिए।
'सुनियोजित' शब्द ही सकारात्मक है। यदि यहाँ 'अनियोजित' या 'अत्यधिक' लिखा होता, तो वह कारण बन जाता। एक ही शब्द बदलने से अर्थ उलट जाता है।

Step 4: गद्यांश से पुष्टि कीजिए।
गद्यांश में कहीं भी यह नहीं लिखा कि जल स्रोतों का उपयोग सुनियोजित ढंग से हो रहा है। उलटे अत्यधिक दोहन की बात है।

Final Answer: (C) जल स्रोतों का सुनियोजित उपयोग

Quick Tip: प्रश्न में नहीं शब्द रेखांकित है। विकल्पों को दो भागों में बाँटिए, कौन समस्या बढ़ाता है और कौन घटाता है।

• • •

5. 'पानी को बूँद-बूँद बचाने के बजाए हम उसे व्यर्थ कर रहे हैं।' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- ऐसे कथन का आशय तब पूरी तरह खुलता है जब उसे रोजमर्रा के उदाहरणों से जोड़कर देखा जाए।
- कथन एक आदत की ओर संकेत करता है, किसी एक घटना की ओर नहीं।

Step 1: कथन में छिपे विरोध को पकड़िए।
वाक्य में 'के बजाए' शब्द सबसे महत्त्वपूर्ण है। यह बताता है कि जो होना चाहिए और जो हो रहा है, दोनों एक-दूसरे के ठीक उलट हैं।

Step 2: जो होना चाहिए, उसे बताइए।
पानी सीमित है, यह बात हम सब जानते हैं। इसलिए उसे बूँद-बूँद, अर्थात अत्यंत मितव्ययिता से खर्च करना चाहिए।

Step 3: जो वास्तव में हो रहा है, उसे उदाहरणों से बताइए।
नल खुला छोड़ देना, टपकते नल की मरम्मत न कराना, वाहन और आँगन धोने में पानी बहा देना, खेतों में आवश्यकता से अधिक सिंचाई करना, ये सब पानी को व्यर्थ करने के ही रूप हैं।

Step 4: इस आदत के परिणाम बताइए।
इसी कारण भू-जल का अत्यधिक दोहन होता है, जल संसाधनों का तेजी से क्षय होता है और गर्मियों में गाँव से महानगर तक पानी के लिए त्राहि-त्राहि मचती है।

Final Answer: कथन का आशय यह है कि जानते-बूझते भी हम पानी की कीमत नहीं समझते। जिस संसाधन को संभालकर खर्च करना चाहिए, उसे हम रोज की

छोटी-छोटी लापरवाहियों से व्यर्थ बहा देते हैं, और इसी से जल-संकट विकराल होता जा रहा है।

Quick Tip: वाक्य में के बजाए शब्द पर ध्यान दीजिए। पहले बताइए कि क्या करना चाहिए, फिर उदाहरण देकर बताइए कि हम वास्तव में क्या कर रहे हैं।

• • •

6. पेय जल की उपलब्धता में निरंतर गिरावट क्यों आ रही है?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- उपलब्धता घटने के कारणों को दो भागों में बाँटकर लिखने से उत्तर अधिक स्पष्ट बनता है।
- एक भाग है मात्रा का घटना और दूसरा है गुणवत्ता का बिगड़ना।

Step 1: पहला भाग, पानी की मात्रा घट रही है।
कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोग के लिए भू-जल का अत्यधिक दोहन हो रहा है, जिससे भू-जल का स्तर लगातार नीचे जा रहा है। कुएँ और हैंडपंप सूखने लगते हैं।

Step 2: मात्रा घटने का दूसरा पहलू, माँग का बढ़ना।
तेजी से बढ़ती आबादी के कारण पानी की माँग बढ़ रही है, जबकि जल संसाधनों का क्षय उतनी ही तेजी से हो रहा है। साथ ही उपलब्ध पानी को बचाने के बजाय व्यर्थ बहाया जा रहा है।

Step 3: दूसरा भाग, पानी की गुणवत्ता बिगड़ रही है।
नदियों, झीलों और भू-जल में औद्योगिक कचरे, रसायनों और प्लास्टिक का स्तर बढ़ता जा रहा है। ऐसा पानी सामने तो दिखता है, पर पिया नहीं जा सकता।

Step 4: दोनों भागों का मिला-जुला परिणाम बताइए।
एक ओर पानी कम हो रहा है और दूसरी ओर जो बचा है वह भी दूषित होता जा रहा है। इन दोनों के मिलने से पीने योग्य पानी की उपलब्धता में निरंतर गिरावट आ रही है।

Final Answer: एक ओर भू-जल के अत्यधिक दोहन, बढ़ती आबादी और पानी की बर्बादी से पानी की मात्रा घट रही है, दूसरी ओर औद्योगिक कचरे, रसायनों और प्लास्टिक से जल स्रोत दूषित हो रहे हैं। इन्हीं दोनों कारणों से पेय जल की उपलब्धता लगातार गिर रही है।

Quick Tip: दो तरह के कारण अलग-अलग लिखिए, एक वे जिनसे पानी की मात्रा घटती है और दूसरे वे जिनसे उपलब्ध पानी पीने लायक नहीं रह जाता।

• • •

7. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

फ्रैंकलिन का प्रसिद्ध कथन है – 'वक्त को बरबाद न करो क्योंकि जीवन इसी से बना है।' समय ही जीवन है। जो अवसरों और संभावनाओं से भरा हुआ है।

जो बुद्धिमानी से इसका उपयोग करते हैं, वे सफलता की नींव रखते हैं, जबकि समय को व्यर्थ करने वाले अधूरे कार्यों और अपूर्ण लक्ष्यों के साथ रह जाते हैं। शास्त्रों में कहा गया है, 'एक-एक पैसे को जोड़कर कोई धनी बनता है, और एक-एक क्षण का उपयोग करके कोई विद्वान।' समय वास्तव में सीमित संसाधन है। जब हम किसी एक चीज के लिए 'हाँ' कहते हैं, तो किसी दूसरी चीज के लिए 'ना' कह रहे होते हैं।

प्राचीन ज्ञान भी यही सिखाता है। अवसर को समय रहते पहचानो और उसका सदुपयोग करो। मानव जीवन एक दुर्लभ उपहार है। यही जीवन हमें विवेक देता है, जो लाभकारी और सुखद के बीच अंतर करने में सक्षम बनाता है। इसलिए हर क्षण का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। जैसे विद्यार्थी परीक्षा के आने के ठीक पहले समय को अच्छी तरह समझकर पूरी निष्ठा से पढ़ाई करते हैं, वैसे ही हमें भी जीवन के हर क्षण को उद्देश्यपूर्ण बनाना चाहिए।

हम अकसर कहते हैं, 'काश मेरे पास और समय होता।' यह सोच हमें थकान और असंतोष की ओर ले जाती है। साथ ही, हम एक तरह की नकारात्मकता से घिर जाते हैं। सच यह है कि हम सबको समान 24 घंटे मिलते हैं। फ़र्क सिर्फ इस बात से पड़ता है कि हम उनका उपयोग कैसे करते हैं।

विद्वानों ने सिखाया कि सफलता उन्हीं को मिलती है, जो अपने समय को केवल सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में निवेश करते हैं। प्रकृति हमें हर दिन समय का समान उपहार देती है। समय की कद्र कीजिए, घड़ी की सूइयों की फुसफुसाहट को सुनिए और उसके संकेतों को समझिए। जो लोग हर क्षण को सार्थक बनाते हैं, वे ही जीवन में संतोष और सफलता का सच्चा संतुलन पाते हैं।

Correct Answer: –

• • •

8. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प चुनिए :

कथन : समय के सदुपयोग का सफलता से गहरा नाता है।
कारण : सफलता उन्हीं को मिलती है, जो अपने समय को सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में निवेश करते हैं।

(A) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

(B) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(C) कथन गलत है और कारण सही है।

(D) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

Correct Answer: (B) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

SOLUTION:

Concept:

- यह परखने का सरल तरीका यह है कि दोनों वाक्यों को 'क्योंकि' से जोड़कर पढ़ा जाए।
- यदि जोड़ने पर वाक्य सहज और सार्थक लगे, तो कारण सही व्याख्या है।

Step 1: दोनों वाक्यों को जोड़कर पढ़िए।
'समय के सदुपयोग का सफलता से गहरा नाता है, *क्योंकि* सफलता उन्हीं को मिलती है जो अपने समय को सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में निवेश करते हैं।'
वाक्य पूरी तरह सहज और अर्थपूर्ण है।

Step 2: दोनों की सत्यता गद्यांश से जाँचिए।
पहली बात गद्यांश के आरंभ में है, कि बुद्धिमानी से समय का उपयोग करने वाले सफलता की नींव रखते हैं। दूसरी बात अंत में विद्वानों के मत के रूप में है। दोनों ही

गद्यांश में मौजूद हैं।

Step 3: शेष विकल्पों को हटाइए।
विकल्प (A), (C) और (D) में से कोई न कोई वाक्य गलत बताया गया है, जबकि दोनों वाक्य गद्यांश में स्पष्ट रूप से लिखे हैं। अतः तीनों बाहर।

Step 4: उत्तर पर पहुँचिए।
दोनों सत्य हैं और दूसरा वाक्य पहले का स्पष्टीकरण है, इसलिए विकल्प (B) ही सही है।

Final Answer: (B) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

Quick Tip: दोनों वाक्यों को क्योंकि शब्द से जोड़कर पढ़िए। यदि वाक्य सहज बन जाए तो कारण, कथन की व्याख्या कर रहा है।

• • •

9. गद्यांश के आधार पर लिखिए कि जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करते हैं, उनका जीवन कैसा होता है?

(I) सफल
(II) व्यस्त
(III) सार्थक
(IV) अनियमित

(A) केवल विकल्प (I) सही है।
(B) (II) और (III) सही हैं।
(C) (I), (II) और (III) सही हैं।
(D) (I) और (III) सही हैं।

Correct Answer: (D) (I) और (III) सही हैं।

SOLUTION:

Concept:

- चारों विकल्पों को देखने से पहले यह तय कर लेना चाहिए कि कौन-सा कथन निश्चित रूप से गलत है, क्योंकि उसे हटाते ही कई विकल्प एक साथ कट जाते हैं।
- यहाँ (IV) सबसे स्पष्ट रूप से गलत है।

Step 1: सबसे स्पष्ट गलत कथन पहचानिए।
'अनियमित' जीवन तो समय बरबाद करने वालों का होता है। कोई भी विकल्प इसे शामिल नहीं करता, इसलिए यह अपने आप बाहर है।

Step 2: अब 'व्यस्त' पर निर्णय लीजिए।
विकल्प (B) और (C) दोनों (II) को सही मानते हैं। गद्यांश में व्यस्तता का कोई उल्लेख नहीं है। साथ ही, गद्यांश का पूरा जोर इस पर है कि सफलता व्यस्त रहने से नहीं, बल्कि समय को *सबसे महत्त्वपूर्ण* कार्यों में लगाने से मिलती है।
अतः (II) गलत है और (B) तथा (C) कट गए।

Step 3: बचे हुए दो विकल्पों में निर्णय कीजिए।
(A) केवल (I) को सही मानता है और (D) (I) तथा (III) दोनों को। अतः केवल यह देखना है कि (III) सही है या नहीं।

Step 4: 'सार्थक' की पुष्टि कीजिए।
गद्यांश का अंतिम वाक्य ही कहता है कि जो हर क्षण को सार्थक बनाते हैं वे ही संतोष और सफलता का सच्चा संतुलन पाते हैं। अतः (III) सही है और विकल्प (D) चुना जाएगा।

Final Answer: (D) (I) और (III) सही हैं।

Quick Tip: हर कथन को अलग-अलग गद्यांश से मिलाइए। ध्यान रखिए कि व्यस्त रहना और समय का सदुपयोग करना एक बात नहीं है।

• • •

10. 'काश मेरे पास और समय होता।' ऐसी सोच किस प्रकार के व्यक्तियों की होती है?

(A) अकर्मण्य और आलसी लोगों की

(B) भाग्यवादी लोगों की

(C) समय की कद्र करने वालों की

(D) परिश्रमी लोगों की

Correct Answer: (A) अकर्मण्य और आलसी लोगों की

SOLUTION:

Concept:

- वाक्य किसकी है, यह जानने के लिए सोचिए कि ऐसी बात कौन कहेगा और कौन कभी नहीं कहेगा।
- इस तरह विकल्प जल्दी छँट जाते हैं।

Step 1: पूछिए कि यह वाक्य कौन नहीं कहेगा।
परिश्रमी व्यक्ति उपलब्ध समय में ही काम निपटा लेता है और समय की कद्र करने वाला तो एक-एक क्षण का हिसाब रखता है। ये दोनों कभी यह शिकायत नहीं करेंगे।
अतः (C) और (D) हट गए।

Step 2: शेष दोनों की तुलना कीजिए।
भाग्यवादी व्यक्ति कहेगा कि जो होना था वही हुआ, मेरे भाग्य में यही था। वह समय को दोष नहीं देता।
पर जो काम टालता रहा और अंत में पूरा नहीं कर पाया, वह ठीक यही कहेगा कि काश मेरे पास और समय होता।

Step 3: गद्यांश से पुष्टि कीजिए।
गद्यांश कहता है कि सबको समान 24 घंटे मिलते हैं, फ़र्क केवल उपयोग से पड़ता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि शिकायत करने वाले ने अपने घंटे व्यर्थ गँवाए हैं।

Step 4: निष्कर्ष निकालिए।
ऐसी सोच अकर्मण्य और आलसी व्यक्ति की है, जो अपनी कमी छिपाने के लिए समय को दोष देता है और इसी से थकान तथा असंतोष में घिर जाता है।

Final Answer: (A) अकर्मण्य और आलसी लोगों की

Quick Tip: सोचिए कि यह शिकायत कौन कभी नहीं करेगा। परिश्रमी और समय की कद्र करने वाला व्यक्ति समय की कमी का बहाना नहीं बनाता।

• • •

11. समय को व्यर्थ गँवाने के क्या परिणाम होते हैं?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- परिणामों को तत्काल और दूरगामी, इन दो भागों में बाँटकर लिखने से उत्तर अधिक व्यवस्थित बनता है।
- गद्यांश में दोनों प्रकार के परिणाम मौजूद हैं।

Step 1: तत्काल परिणाम, काम अटक जाता है।
जो समय बरबाद करते हैं वे अधूरे कार्यों और अपूर्ण लक्ष्यों के साथ रह जाते हैं। जिस दिन का काम उस दिन नहीं हुआ, वह अगले दिन के काम पर बोझ बनकर चढ़ जाता है।

Step 2: तत्काल परिणाम का दूसरा रूप, अवसर का चूकना।
समय अवसरों और संभावनाओं से भरा होता है, पर अवसर ठहरता नहीं। गद्यांश इसीलिए कहता है कि अवसर को समय रहते पहचानो। जो चूक गया, वह लौटता नहीं।

Step 3: दूरगामी परिणाम, मन की स्थिति बिगड़ना।
आगे चलकर व्यक्ति कहता है, काश मेरे पास और समय होता। यह सोच थकान और असंतोष लाती है और उसे नकारात्मकता से घेर लेती है। समस्या अब केवल काम की नहीं, मनोदशा की भी हो जाती है।

Step 4: सबसे बड़ा दूरगामी परिणाम, जीवन का असंतुलन।
गद्यांश के अनुसार जो हर क्षण को सार्थक बनाते हैं वे ही संतोष और सफलता का सच्चा संतुलन पाते हैं। इसका उलटा अर्थ यह है कि समय गँवाने वाला न सफलता पाता है, न संतोष।

Final Answer: तत्काल तो काम अधूरे रह जाते हैं और अवसर हाथ से निकल जाते हैं, और आगे चलकर व्यक्ति थकान, असंतोष तथा नकारात्मकता से घिरकर जीवन में सफलता और संतोष दोनों खो देता है।

Quick Tip: वे बातें लिखिए जो समय बरबाद करने के बाद होती हैं, जैसे काम अधूरे रहना, अवसर निकल जाना, और बाद में थकान तथा असंतोष होना।

• • •

12. हर क्षण का विवेकपूर्ण उपयोग क्यों आवश्यक है?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- इस प्रश्न का उत्तर तब अधिक स्पष्ट होता है जब समय की तुलना किसी सीमित धन से की जाए।
- सीमित धन को कोई भी बिना सोचे खर्च नहीं करता, यही बात समय पर भी लागू होती है।

Step 1: समय को सीमित पूँजी मानकर देखिए।
गद्यांश समय को सीमित संसाधन कहता है और शास्त्रों का यह वचन भी देता है कि एक-एक पैसा जोड़कर कोई धनी बनता है और एक-एक क्षण का उपयोग करके कोई विद्वान।
जैसे पैसा सोच-समझकर खर्च होता है, वैसे ही क्षण भी।

Step 2: हर खर्च की एक कीमत होती है।
जब हम किसी एक चीज के लिए हाँ कहते हैं, तो किसी दूसरी के लिए ना कह रहे होते हैं। अर्थात एक घंटा जिस काम में लगा, वह घंटा किसी और काम से छिन गया। इसीलिए चुनाव विवेक से करना पड़ता है।

Step 3: विवेक की भूमिका समझिए।
मानव जीवन दुर्लभ उपहार है और यही हमें विवेक देता है, जो लाभकारी और सुखद के बीच अंतर करना सिखाता है। बिना विवेक के व्यक्ति वही चुनेगा जो तुरंत अच्छा लगे, भले ही वह आगे चलकर हानिकारक हो।

Step 4: अंतिम लाभ बताइए।
प्रकृति हर दिन सबको समय का समान उपहार देती है। जो हर क्षण को उद्देश्यपूर्ण और सार्थक बनाते हैं, वे ही जीवन में संतोष और सफलता का सच्चा संतुलन पाते हैं।

Final Answer: समय एक सीमित पूँजी है जिसे एक बार खर्च करने पर वापस नहीं पाया जा सकता। हर क्षण किसी एक काम को देने का अर्थ है किसी दूसरे काम से उसे छीन लेना, इसलिए विवेक से चुनाव करना आवश्यक है, तभी जीवन में सफलता और संतोष दोनों मिलते हैं।

Quick Tip: समय को सीमित पूँजी मानकर सोचिए। गद्यांश की वह पंक्ति याद रखिए जिसमें एक चीज के लिए हाँ कहने का अर्थ दूसरी के लिए ना कहना बताया गया है।

• • •

13. दूसरों की सहायता करने वाले आप महान हैं। – वाक्य में से सर्वनाम पदबंध छाँटकर लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- पदबंध छाँटते समय पहले शीर्ष पद पकड़िए, फिर पीछे की ओर चलते हुए वे सभी शब्द जोड़ते जाइए जो उसी की बात कर रहे हों।
- जहाँ कोई ऐसा शब्द मिले जो शीर्ष पद से नहीं जुड़ता, वहीं पदबंध समाप्त हो जाता है।

Step 1: शीर्ष पद पकड़िए।
प्रश्न सर्वनाम पदबंध माँग रहा है, इसलिए पहले वाक्य का सर्वनाम ढूँढ़िए। वाक्य में वह **आप** है।

Step 2: पीछे की ओर बढ़िए।
'आप' से ठीक पहले है 'वाले', उससे पहले 'करने', फिर 'सहायता' और फिर 'दूसरों की'। ये सब मिलकर एक ही बात कह रहे हैं, कि आप कैसे हैं।

Step 3: जाँचिए कि पदबंध कहाँ रुकेगा।
आगे का शब्द 'महान' है, जो विधेय का भाग है और 'आप' के बारे में बयान दे रहा है, उसका विस्तार नहीं कर रहा। इसलिए पदबंध 'आप' पर ही समाप्त होगा।

Step 4: उत्तर लिखिए।

अतः सर्वनाम पदबंध है – दूसरों की सहायता करने वाले आप।

Final Answer: दूसरों की सहायता करने वाले आप

Quick Tip: पहले वाक्य का सर्वनाम ढूँढ़िए, फिर उससे पहले आए वे सभी शब्द जोड़ लीजिए जो उसी सर्वनाम की विशेषता बता रहे हों।

• • •

14. हम सबको एड़ियों पर अकड़कर चलना अच्छा लगता था। – रेखांकित पदबंध का भेद लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- पदबंध का भेद पहचानने का सबसे भरोसेमंद तरीका यह है कि पूरे समूह के स्थान पर एक शब्द रखकर देखा जाए।
- जिस श्रेणी का शब्द वहाँ फिट बैठे, पदबंध उसी श्रेणी का होगा।

Step 1: पूरे समूह की जगह एक शब्द रखिए।
वाक्य है – हम सबको एड़ियों पर अकड़कर चलना अच्छा लगता था।
अब इसके स्थान पर रखिए – हम सबको **दौड़** अच्छी लगती थी, या हम सबको **खेल** अच्छा लगता था।

Step 2: देखिए कि कौन-सा शब्द बैठा।
वहाँ 'दौड़' और 'खेल' जैसे संज्ञा शब्द ही बैठते हैं। कोई क्रिया या विशेषण वहाँ नहीं बैठेगी।
इसका अर्थ है कि वह स्थान संज्ञा का है।

Step 3: शीर्ष पद से पुष्टि कीजिए।
समूह का शीर्ष पद 'चलना' है, जो यहाँ क्रियार्थक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुआ है, अर्थात क्रिया से बना हुआ संज्ञा।

Step 4: उत्तर दीजिए।
दोनों जाँच एक ही उत्तर देती हैं, इसलिए यह संज्ञा पदबंध है।

Final Answer: संज्ञा पदबंध

Quick Tip: पूरे रेखांकित भाग की जगह कोई एक शब्द रखकर देखिए। यदि वहाँ खेल या दौड़ जैसा शब्द बैठता है तो वह स्थान संज्ञा का है।

• • •

15. उसके साहसिक कारनामें आसपास के गाँवों में काफी चर्चित थे। – वाक्य में रेखांकित पदबंध का भेद लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- यदि कोई पदबंध वाक्य में कर्ता या कर्म की जगह खड़ा है, तो वह संज्ञा पदबंध ही होगा।
- 'कौन' या 'क्या' पूछकर यह तुरंत जाँचा जा सकता है।

Step 1: वाक्य से प्रश्न पूछिए।
वाक्य है – उसके साहसिक कारनामें आसपास के गाँवों में काफी चर्चित थे।
पूछिए, **कौन** चर्चित थे? उत्तर मिलेगा, उसके साहसिक कारनामें।

Step 2: उत्तर के स्थान का स्वभाव समझिए।

'कौन' के उत्तर में जो आता है वह कर्ता होता है, और कर्ता सदा संज्ञा या सर्वनाम होता है। यहाँ कोई सर्वनाम शीर्ष पर नहीं है।

Step 3: अन्य भेदों की जाँच कीजिए।
'साहसिक' विशेषण अवश्य है, पर वह अकेला शीर्ष पद नहीं है, वह तो कारनामों की विशेषता बता रहा है। इसी तरह समूह में कोई क्रिया भी नहीं है।

Step 4: उत्तर पर पहुँचिए।
शीर्ष पद 'कारनामें' संज्ञा है, इसलिए यह संज्ञा पदबंध है।

Final Answer: संज्ञा पदबंध

Quick Tip: वाक्य से पूछिए कि चर्चित कौन थे। जो उत्तर आए वही कर्ता है, और कर्ता का स्थान संज्ञा का होता है।

• • •

16. उसके पिता की प्रत्येक तीन वर्ष पर बदली होती रहती थी। वाक्य में रेखांकित पदबंध का भेद बताते हुए कारण भी स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- यह जाँचने का सरल तरीका यह है कि वाक्य से पूछा जाए, कर्ता ने किया क्या।
- उस प्रश्न के उत्तर में जो पूरा समूह आए, वही क्रिया पदबंध होता है।

Step 1: वाक्य से क्रिया वाला प्रश्न पूछिए।
वाक्य है – उसके पिता की प्रत्येक तीन वर्ष पर बदली होती रहती थी।
पूछिए, होता **क्या** था? उत्तर आता है, बदली होती रहती थी।

Step 2: देखिए कि उत्तर एक शब्द है या समूह।
उत्तर एक शब्द नहीं, चार शब्दों का समूह है। जब कई शब्द मिलकर एक क्रिया का काम करें, तो वह क्रिया पदबंध कहलाता है।

Step 3: सहायक क्रियाओं की भूमिका देखिए।
'रहती' से पता चलता है कि यह काम एक बार नहीं, बार-बार होता था, और 'थी' से काल का बोध होता है। दोनों अकेले कोई अर्थ नहीं देतीं, मुख्य क्रिया का सहारा लेकर ही अर्थ पूरा करती हैं।

Step 4: भेद और कारण एक साथ लिखिए।
भेद है क्रिया पदबंध, और कारण यह है कि मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ जुड़कर एक ही इकाई बनी हैं जो वाक्य की क्रिया का काम कर रही है।

Final Answer: क्रिया पदबंध – क्योंकि मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ मिलकर एक इकाई बनाती हैं और यही पूरा समूह वाक्य में क्रिया का कार्य करता है।

Quick Tip: वाक्य से पूछिए कि होता क्या था। उत्तर में जो पूरा शब्द-समूह आए, उसमें मुख्य क्रिया और सहायक क्रियाएँ अलग करके दिखाइए।

• • •

17. वे सरल हृदय व्यक्ति थे। – रेखांकित पदबंध का भेद लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- पदबंध पहचानने में सबसे आम गलती यह होती है कि समूह के पहले शब्द को देखकर भेद तय कर लिया जाता है।
- नियम यह है कि भेद हमेशा *अंतिम* मुख्य शब्द से तय होगा, पहले शब्द से नहीं।

Step 1: संभावित भ्रम को पहचानिए।
समूह 'वे' से शुरू होता है, जो सर्वनाम है। इसे देखकर कोई इसे सर्वनाम पदबंध समझ सकता है, पर यह गलत होगा।

Step 2: नियम लागू कीजिए।
पदबंध का भेद शीर्ष पद से तय होता है, और यहाँ शीर्ष पद अंत में आया **व्यक्ति** है, जो संज्ञा है।

Step 3: जाँच के लिए शब्द हटाकर देखिए।
'वे' हटा दीजिए तो बचता है 'सरल हृदय व्यक्ति', अर्थ फिर भी पूरा रहता है। पर 'व्यक्ति' हटा दीजिए तो 'वे सरल हृदय थे' में समूह का आधार ही चला जाता है। जो शब्द हटाने पर समूह टूट जाए, वही शीर्ष पद है।

Step 4: उत्तर दीजिए।
शीर्ष पद संज्ञा होने के कारण यह संज्ञा पदबंध है।

Final Answer: संज्ञा पदबंध

Quick Tip: समूह के पहले शब्द को देखकर भेद मत तय कीजिए। अंतिम मुख्य शब्द देखिए, जिसे हटाने पर पूरा समूह टूट जाए।

• • •

18. क्योंकि गांधी जी व्यावहारिकता की कीमत को भी पहचानते थे इसलिए वे अपने विलक्षण आदर्श को चला सके। – रचना की दृष्टि से वाक्य-भेद लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- यह जाँचने का व्यावहारिक तरीका यह है कि दोनों उपवाक्यों को अलग-अलग करके पढ़ा जाए।
- यदि दोनों अकेले पूरे वाक्य लगें तो संयुक्त, और यदि एक दूसरे के बिना अधूरा लगे तो मिश्र।

Step 1: दोनों भागों को अलग करके पढ़िए।
पहला भाग – 'क्योंकि गांधी जी व्यावहारिकता की कीमत को भी पहचानते थे।'
यह अकेला पढ़ने पर अधूरा लगता है, मन तुरंत पूछता है, तो फिर क्या हुआ?

Step 2: दूसरे भाग को देखिए।
दूसरा भाग – 'वे अपने विलक्षण आदर्श को चला सके।'
यह अपने आप में पूरा है, इसलिए यही मुख्य उपवाक्य है।

Step 3: निष्कर्ष निकालिए।
एक भाग अधूरा और दूसरे पर आश्रित है, इसलिए यह संयुक्त वाक्य नहीं हो सकता।
संयुक्त वाक्य में दोनों भाग स्वतंत्र होते हैं।

Step 4: योजक से पुष्टि कीजिए।
'क्योंकि' कारणवाचक व्यधिकरण योजक है, जो सदा आश्रित उपवाक्य जोड़ता है।
यही मिश्र वाक्य की पहचान है।

Final Answer: मिश्र वाक्य

Quick Tip: योजक शब्द देखिए। क्योंकि, कि, जो, जब, यदि जैसे शब्द आश्रित उपवाक्य जोड़ते हैं और मिश्र वाक्य बनाते हैं।

• • •

19. टोपी एक कोने में बैठकर रोने लगा। – संयुक्त वाक्य में रूपांतरित करके लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- सरल वाक्य को संयुक्त बनाने की पहचान यह है कि वाक्य में 'कर' से बनी क्रिया ढूँढ़ी जाए, जैसे बैठकर, देखकर, सुनकर।
- यही 'कर' वाली क्रिया वह जोड़ है जहाँ वाक्य को तोड़ा जा सकता है।

Step 1: जोड़ का स्थान खोजिए।
वाक्य में 'बैठकर' शब्द है। यही वह बिंदु है जहाँ दो अलग-अलग काम एक में जोड़ दिए गए हैं, पहले बैठना और फिर रोना।

Step 2: वाक्य को दो टुकड़ों में तोड़िए।
पहला काम – टोपी एक कोने में बैठा।
दूसरा काम – टोपी रोने लगा।
अब दोनों स्वतंत्र वाक्य हैं।

Step 3: दोहराव हटाकर जोड़िए।
दोनों का कर्ता एक ही है, इसलिए दूसरे में 'टोपी' दोहराने की आवश्यकता नहीं।
योजक 'और' लगाकर जोड़ दीजिए।

Step 4: अंतिम रूप लिखिए।
टोपी एक कोने में बैठा और रोने लगा।
ध्यान रखिए कि 'बैठकर' को 'बैठा' करना आवश्यक है, अन्यथा वाक्य संयुक्त नहीं बनेगा।

Final Answer: टोपी एक कोने में बैठा और रोने लगा।

Quick Tip: वाक्य में कर से बनी क्रिया ढूँढ़िए। उसे पूर्ण क्रिया में बदलकर और योजक से दोनों भागों को जोड़ दीजिए।

• • •

20. उसकी योजना किसी तरह नेपाल पहुँचने की है। – मिश्र वाक्य में रूपांतरित करके लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- मिश्र वाक्य बनाने का सबसे भरोसेमंद ढाँचा है – '... यह है कि ...'।
- इस ढाँचे में मुख्य बात पहले आती है और विस्तार 'कि' के बाद।

Step 1: वाक्य में मुख्य बात और विस्तार अलग कीजिए।
मुख्य बात – उसकी एक योजना है।
विस्तार – वह योजना क्या है, अर्थात किसी तरह नेपाल पहुँचना।

Step 2: ढाँचे में मुख्य बात रखिए।
'उसकी योजना **यह है**' – यह मुख्य उपवाक्य बन गया, जो अपने आप में पूरा है।

Step 3: 'कि' के बाद विस्तार रखिए।
'**कि** वह किसी तरह नेपाल पहुँच जाए' – यह आश्रित उपवाक्य है, जो अकेले अधूरा लगता है।
यहाँ 'पहुँचने' को 'पहुँच जाए' करना आवश्यक है, तभी वह पूरी क्रिया बनेगी।

Step 4: वाक्य पढ़कर जाँचिए।
उसकी योजना यह है कि वह किसी तरह नेपाल पहुँच जाए।
पहला भाग अकेले पूरा लगता है, दूसरा अधूरा, यही मिश्र वाक्य की पहचान है।

Final Answer: उसकी योजना यह है कि वह किसी तरह नेपाल पहुँच जाए।

Quick Tip: मिश्र वाक्य का ढाँचा याद रखिए, यह है कि। मुख्य बात पहले लिखिए और कि के बाद विस्तार, क्रिया को पूर्ण रूप देकर।

• • •

21. पहले दस-पंद्रह मिनट तो मैं उलझन में पड़ा रहा। – रचना की दृष्टि से वाक्य-भेद लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- वाक्य-भेद पहचानने का सबसे तेज तरीका यह है कि वाक्य में पूर्ण क्रियाएँ गिन ली जाएँ।
- जितनी पूर्ण क्रियाएँ, उतने उपवाक्य।

Step 1: वाक्य की पूर्ण क्रियाएँ गिनिए।
पूरे वाक्य में केवल एक पूर्ण क्रिया है – **पड़ा रहा**। 'रहा' सहायक क्रिया है, अलग क्रिया नहीं।

Step 2: नियम लागू कीजिए।
एक पूर्ण क्रिया का अर्थ है एक उपवाक्य, और एक उपवाक्य वाला वाक्य सदा सरल वाक्य होता है।

Step 3: लंबाई के भ्रम से बचिए।
'पहले दस-पंद्रह मिनट तो' और 'उलझन में' जैसे शब्द वाक्य को लंबा अवश्य करते हैं, पर ये केवल समय और स्थिति बताने वाले पदबंध हैं। इनमें कोई क्रिया नहीं है, इसलिए ये उपवाक्य नहीं बनाते।

Step 4: उत्तर की पुष्टि कीजिए।

यदि वाक्य होता 'पहले मैं उलझन में पड़ा रहा और फिर मैंने निर्णय लिया', तो दो क्रियाएँ होतीं और वह संयुक्त वाक्य बनता। यहाँ ऐसा नहीं है।

Final Answer: सरल वाक्य

Quick Tip: वाक्य की पूर्ण क्रियाएँ गिनिए। एक ही क्रिया हो तो वाक्य सरल है, चाहे वह कितना भी लंबा क्यों न लगे।

• • •

22. मुझे अच्छी तरह पता है कि वह इन्हीं जंगलों में है। – सरल वाक्य में रूपांतरित करके लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- मिश्र को सरल बनाने का नियम सीधा है – वाक्य में जितनी पूर्ण क्रियाएँ हैं, उन्हें घटाकर एक कर दीजिए।
- अतिरिक्त क्रिया को संज्ञा रूप में बदल देने से वह क्रिया नहीं रह जाती।

Step 1: पूर्ण क्रियाएँ गिनिए।
मूल वाक्य में दो पूर्ण क्रियाएँ हैं – एक 'पता है' और दूसरी 'है' (जंगलों में है)। इसीलिए यह मिश्र वाक्य है।

Step 2: तय कीजिए कौन-सी क्रिया रहेगी।
वाक्य की मुख्य बात यह है कि मुझे पता है। इसलिए 'पता है' बची रहेगी और दूसरी क्रिया को हटाना होगा।

Step 3: दूसरी क्रिया को संज्ञा में बदलिए।

'वह ... में है' को बदलकर 'उसके ... में **होने** का' कर दीजिए। अब यह क्रिया न रहकर एक नामपद बन गया है।
साथ ही कर्ता 'वह' को 'उसके' करना आवश्यक है।

Step 4: नया वाक्य लिखकर गिनती दोहराइए।
मुझे उसके इन्हीं जंगलों में होने का अच्छी तरह पता है।
अब पूर्ण क्रिया केवल एक है, इसलिए वाक्य सरल हो गया।

Final Answer: मुझे उसके इन्हीं जंगलों में होने का अच्छी तरह पता है।

Quick Tip: कि हटाइए और उसके बाद वाली क्रिया को होने जैसे संज्ञा रूप में बदल दीजिए, साथ ही कर्ता को भी तदनुसार बदलिए।

• • •

23. 'दाल-भात' द्वंद्व समास का उदाहरण है, कैसे?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- समास का भेद जानने के लिए यह देखना चाहिए कि समस्तपद में *प्रधान कौन* है, पहला पद, दूसरा पद, दोनों, या कोई तीसरा।
- इन्हीं चार स्थितियों से अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वंद्व और बहुव्रीहि का भेद बनता है।

Step 1: चारों संभावनाएँ सामने रखिए।
यदि पहला पद प्रधान हो तो अव्ययीभाव, दूसरा पद प्रधान हो तो तत्पुरुष, दोनों प्रधान हों तो द्वंद्व, और दोनों छोड़कर कोई तीसरा अर्थ प्रधान हो तो बहुव्रीहि।

Step 2: 'दाल-भात' पर यह कसौटी लगाइए।

क्या भात दाल की विशेषता बता रहा है? नहीं। क्या दाल भात की विशेषता बता रही है? नहीं। क्या कोई तीसरा अर्थ निकल रहा है? नहीं।
दोनों अपने-अपने अर्थ में स्वतंत्र और बराबर हैं।

Step 3: विग्रह से पुष्टि कीजिए।
विग्रह बनता है – दाल और भात। जहाँ विग्रह में 'और' आए, वहाँ द्वंद्व समास ही होगा।

Step 4: इसी तरह के अन्य उदाहरण देखिए।
माता-पिता, रात-दिन, भाई-बहन, राजा-रानी, ये सब द्वंद्व समास के उदाहरण हैं, क्योंकि सबमें दोनों पद प्रधान हैं।

Final Answer: 'दाल-भात' में दोनों पद प्रधान हैं और इसका विग्रह 'दाल और भात' होता है, जिसमें 'और' योजक लगता है। यही द्वंद्व समास की पहचान है।

Quick Tip: विग्रह करके देखिए कि बीच में और लगता है या नहीं, और यह भी जाँचिए कि दोनों पद बराबर महत्त्व के हैं या एक दूसरे की विशेषता बता रहा है।

• • •

24. लोग डरकर अपने-अपने पूजा-स्थलों में प्रार्थना करने लगे। – रेखांकित पद का समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- विग्रह करने का सरल तरीका यह है कि दोनों पदों के बीच बारी-बारी से का, के लिए, से, में लगाकर देखा जाए।
- जो चिह्न लगाने पर अर्थ सहज बने, वही सही विग्रह है और वही उपभेद तय करता है।

Step 1: दोनों पद अलग कीजिए।
पूजा + स्थल।

Step 2: बीच में अलग-अलग चिह्न लगाकर देखिए।
'पूजा को स्थल' – अर्थ नहीं बनता।
'पूजा से स्थल' – अर्थ नहीं बनता।
'**पूजा का स्थल**' – अर्थ पूरी तरह सहज है।

Step 3: अब प्रधान पद जाँचिए।
वाक्य में लोग कहाँ प्रार्थना कर रहे थे? स्थल में। अर्थात पूरा ध्यान 'स्थल' पर है, 'पूजा' तो उसकी पहचान भर है। दूसरा पद प्रधान है।

Step 4: भेद और उपभेद लिखिए।
दूसरा पद प्रधान होने से तत्पुरुष समास, और 'का' चिह्न होने से संबंध तत्पुरुष।
इसी तरह के उदाहरण हैं – राजपुत्र (राजा का पुत्र), गंगाजल (गंगा का जल)।

Final Answer: विग्रह – **पूजा का स्थल**, समास – **तत्पुरुष (संबंध तत्पुरुष) समास**।

Quick Tip: दोनों पदों के बीच का, को, से, में बारी-बारी लगाकर देखिए। जिससे अर्थ सहज बने वही विग्रह है, और वही चिह्न उपभेद बताता है।

• • •

25. पंचानन पद समास के किस भेद का उदाहरण है?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- बहुव्रीहि और द्विगु में अंतर पहचानने की कसौटी यह है कि विग्रह में 'जिसके', 'जिसका', 'वह' जैसे शब्द आते हैं या नहीं।
- यदि विग्रह के अंत में 'वह' या किसी का नाम आए, तो समास बहुव्रीहि है।

Step 1: पहले द्विगु की संभावना जाँचिए।
पद में 'पंच' अर्थात संख्या है, इसलिए पहली नजर में यह द्विगु लग सकता है। द्विगु में पहला पद संख्यावाचक होता है और समूह का बोध होता है, जैसे नवरत्न अर्थात नौ रत्नों का समूह।

Step 2: देखिए कि यहाँ समूह का बोध हो रहा है या नहीं।
'पंचानन' से पाँच मुखों का कोई समूह नहीं समझा जाता। इससे तो एक ऐसे व्यक्ति का बोध होता है जिसके पाँच मुख हैं।

Step 3: विग्रह लिखकर कसौटी लगाइए।
विग्रह बनता है – **पाँच हैं आनन जिसके, वह अर्थात शिव**।
'जिसके' और 'वह' दोनों आ गए, यही बहुव्रीहि की पक्की पहचान है।

Step 4: इसी तरह के उदाहरण देखिए।
दशानन अर्थात दस हैं आनन जिसके, वह रावण। चतुर्भुज अर्थात चार हैं भुजाएँ जिसकी, वह विष्णु। इन सबमें तीसरा अर्थ प्रधान है।

Final Answer: यह **बहुव्रीहि समास** है, क्योंकि इसका विग्रह है – पाँच हैं आनन जिसके, वह शिव।

Quick Tip: विग्रह करके देखिए कि अंत में जिसके या वह जैसा शब्द आता है या नहीं। यदि किसी तीसरे का बोध हो तो समास बहुव्रीहि है, द्विगु नहीं।

• • •

26. नियम के अनुसार ही कार्य करो। – रेखांकित पदों के लिए उपयुक्त समस्तपद और समास के भेद का नाम लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- अव्ययीभाव समास पहचानने की सबसे सरल कसौटी यह है कि समस्तपद वाक्य में क्रिया के बारे में बताता है, किसी संज्ञा के बारे में नहीं।
- ऐसा पद अविकारी होता है, अर्थात लिंग और वचन बदलने पर भी उसका रूप नहीं बदलता।

Step 1: पहले समस्तपद बनाइए।
'नियम के अनुसार' को एक शब्द में लिखने पर बनता है **नियमानुसार**। यहाँ 'नियम' के साथ 'अनुसार' जुड़कर संधि के नियमानुसार 'नियमानुसार' रूप बना।

Step 2: वाक्य में इसका काम देखिए।
वाक्य है – नियमानुसार ही कार्य करो।
पूछिए, कार्य **कैसे** करो? उत्तर है, नियमानुसार। अर्थात यह पद क्रिया की विशेषता बता रहा है।

Step 3: अविकारिता की जाँच कीजिए।
चाहे कार्य एक हो या अनेक, चाहे कर्ता पुरुष हो या स्त्री, 'नियमानुसार' का रूप वही रहेगा। यह अव्यय का लक्षण है।

Step 4: भेद घोषित कीजिए।
पहला पद अव्यय, वही प्रधान, और पूरा पद क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त, अतः यह अव्ययीभाव समास है।

Final Answer: समस्तपद **नियमानुसार**, समास **अव्ययीभाव**।

Quick Tip: पहले दोनों शब्दों को जोड़कर एक शब्द बनाइए। फिर देखिए कि वह पद क्रिया के बारे में बता रहा है या किसी संज्ञा के बारे में।

• • •

27. 'कर्मधारय समास' का एक उदाहरण देकर उसका समास-विग्रह भी लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- कर्मधारय और तत्पुरुष में अंतर यह है कि तत्पुरुष के विग्रह में कारक चिह्न (का, को, से, में) लगता है, जबकि कर्मधारय के विग्रह में 'है जो' या 'के समान' लगता है।
- इसी अंतर को ध्यान में रखकर उदाहरण चुनना चाहिए।

Step 1: ऐसा उदाहरण चुनिए जिसमें एक पद गुण बताए।
महापुरुष लीजिए। इसमें 'महा' गुण बता रहा है और 'पुरुष' वह वस्तु है जिसका गुण बताया जा रहा है।

Step 2: विग्रह करके कसौटी लगाइए।
विग्रह होगा – **महान है जो पुरुष**।
यहाँ 'का' या 'को' नहीं लगा, बल्कि 'है जो' लगा। इसलिए यह तत्पुरुष नहीं, कर्मधारय है।

Step 3: उपमान वाला रूप भी देखिए।
कर्मधारय का दूसरा रूप वह है जिसमें तुलना होती है, जैसे **चरणकमल** अर्थात कमल

के समान चरण। यहाँ विग्रह में 'के समान' लगता है।

Step 4: उत्तर व्यवस्थित रूप से लिखिए।
उदाहरण के साथ विग्रह लिखना आवश्यक है, केवल शब्द लिख देने से अंक पूरे नहीं मिलते।

Final Answer: उदाहरण – **महापुरुष**, समास-विग्रह – **महान है जो पुरुष**।

Quick Tip: ऐसा शब्द चुनिए जिसमें एक पद दूसरे का गुण बता रहा हो, और विग्रह में है जो लगाकर लिखिए, का या को नहीं।

• • •

28. 'सिर आँखों पर बिठाना' – मुहावरे का अर्थ लिखिए और मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- मुहावरे का वाक्य प्रयोग करते समय केवल मुहावरा चिपका देना पर्याप्त नहीं होता। वाक्य ऐसा हो कि पढ़ने वाला अर्थ न जानता हो तब भी समझ जाए।
- इसके लिए वाक्य में कोई कारण या प्रसंग जोड़ना चाहिए।

Step 1: मुहावरे के चित्र को समझिए।
सिर और आँखें, दोनों शरीर के सबसे ऊँचे और सबसे संभालकर रखे जाने वाले अंग हैं। किसी को वहाँ बिठाने की कल्पना ही अत्यधिक आदर का भाव देती है।

Step 2: अर्थ को शब्दों में रखिए।
अर्थ है – किसी का बहुत अधिक आदर-सत्कार करना, उसे बहुत ऊँचा स्थान देना।

Step 3: वाक्य में कारण जोड़िए।
यदि केवल लिखा जाए 'लोगों ने उसे सिर आँखों पर बिठाया', तो अर्थ तो आ जाएगा पर प्रसंग नहीं बनेगा। इसलिए बताइए कि आदर क्यों हुआ।

Step 4: पूरा वाक्य लिखिए।
वाक्य प्रयोग – डूबते बच्चे को बचाने वाले उस युवक को गाँव वालों ने सिर आँखों पर बिठाया।
यहाँ कारण भी है और अर्थ भी स्पष्ट है।

Final Answer: अर्थ – अत्यधिक आदर-सम्मान देना।
वाक्य प्रयोग – डूबते बच्चे को बचाने वाले उस युवक को गाँव वालों ने सिर आँखों पर बिठाया।

Quick Tip: अर्थ लिखने के बाद ऐसा वाक्य बनाइए जिसमें आदर का कारण भी दिखे, तभी मुहावरे का अर्थ वाक्य से स्पष्ट होगा।

• • •

29. 'महंत जी को लग रहा था कि हरिहर _____ गया है।' – रिक्त स्थान की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे से कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- रिक्त स्थान भरते समय दो कसौटियाँ एक साथ लगानी चाहिए, अर्थ की और व्याकरण की।
- वाक्य के बाकी शब्द बता देते हैं कि मुहावरे का कौन-सा रूप वहाँ बैठेगा।

Step 1: वाक्य के आगे-पीछे के शब्द देखिए।
रिक्त स्थान के बाद 'गया है' लिखा है। अर्थात वहाँ ऐसा मुहावरा चाहिए जो 'गया है' के साथ जुड़ सके, जैसे निकल गया है, फिसल गया है।

Step 2: अब अर्थ की कसौटी लगाइए।
महंत जी हरिहर काका की जमीन हड़पना चाहते थे और इसके लिए उन्हें अपने प्रभाव में रखना जरूरी था। जब वह प्रभाव टूट गया, तो चिंता स्वाभाविक थी।
अतः वहाँ 'वश से बाहर होना' वाला अर्थ चाहिए।

Step 3: दोनों कसौटियों पर खरा मुहावरा चुनिए।
'हाथ से निकल जाना' दोनों शर्तें पूरी करता है। इसका अर्थ भी वश से बाहर होना है और इसका रूप भी 'गया है' के साथ ठीक बैठता है।

Step 4: पूरा वाक्य लिखिए।
महंत जी को लग रहा था कि हरिहर हाथ से निकल गया है।

Final Answer: रिक्त स्थान में आएगा – **हाथ से निकल**। पूरा वाक्य – महंत जी को लग रहा था कि हरिहर हाथ से निकल गया है।

Quick Tip: रिक्त स्थान के बाद गया है लिखा है, इसलिए वैसा ही रूप वाला मुहावरा चुनिए। प्रसंग यह है कि हरिहर काका महंत जी के वश से बाहर हो गए थे।

• • •

30. 'सिर पर नंगी तलवार लटकना' मुहावरे का वाक्य में इस तरह प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- अर्थ स्पष्ट करने वाला वाक्य बनाने का सरल सूत्र है – पहले खतरे का कारण बताइए, फिर मुहावरा लगाइए।
- इस क्रम से पढ़ने वाले को अर्थ अपने आप समझ आ जाता है।

Step 1: मुहावरे के चित्र से अर्थ निकालिए।
नंगी तलवार अर्थात म्यान से बाहर निकली हुई तलवार, और वह भी सिर के ठीक ऊपर टँगी हुई। ऐसी स्थिति में एक पल भी चैन नहीं मिल सकता।
अर्थ हुआ, हर समय बड़ा खतरा बना रहना।

Step 2: सूत्र का पहला भाग रखिए, कारण।
जैसे – 'परीक्षा में केवल तीन दिन बचे थे और अभी आधा पाठ्यक्रम भी पूरा नहीं हुआ था'।

Step 3: सूत्र का दूसरा भाग रखिए, मुहावरा।
'इसलिए रोहन के सिर पर नंगी तलवार लटक रही थी।'

Step 4: पूरा वाक्य पढ़कर जाँचिए।
वाक्य प्रयोग – परीक्षा में केवल तीन दिन बचे थे और आधा पाठ्यक्रम अभी बाकी था, इसलिए रोहन के सिर पर नंगी तलवार लटक रही थी।
जो व्यक्ति मुहावरा नहीं जानता, वह भी इस वाक्य से अर्थ समझ जाएगा।

Final Answer: परीक्षा में केवल तीन दिन बचे थे और आधा पाठ्यक्रम अभी बाकी था, इसलिए रोहन के सिर पर नंगी तलवार लटक रही थी।

Quick Tip: पहले खतरे का कारण लिखिए, फिर मुहावरा लगाइए। इस क्रम से वाक्य पढ़ते ही अर्थ अपने आप स्पष्ट हो जाएगा।

• • •

31. 'बिना परिश्रम के ही सफलता मिल जाना' – अर्थ को व्यक्त करने वाला एक उपयुक्त मुहावरा लिखिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- अर्थ से मुहावरा खोजते समय उपयोगी तरीका यह है कि उस स्थिति का एक चित्र मन में बनाया जाए।
- मुहावरे प्रायः किसी चित्र या दृश्य पर ही टिके होते हैं।

Step 1: स्थिति का चित्र बनाइए।
कोई व्यक्ति कुछ कर नहीं रहा, बस बैठा है, और लाभ अपने आप उस तक चला आता है।

Step 2: ऐसा मुहावरा याद कीजिए जिसमें यही चित्र हो।
घर बैठे गंगा आना में ठीक यही चित्र है। सामान्यतः गंगा तक जाना पड़ता है, पर यहाँ गंगा स्वयं चलकर घर आ गई।

Step 3: चित्र का अर्थ खोलिए।
अर्थात जो लाभ पाने के लिए बड़ा प्रयास करना पड़ता, वह बिना किसी प्रयास के मिल गया। यही प्रश्न में दिया गया अर्थ है।

Step 4: गलत विकल्पों से बचिए।
'हाथ लगना' या 'मुँह में पानी आना' जैसे मुहावरे यहाँ नहीं चलेंगे, क्योंकि उनमें बिना परिश्रम वाला भाव नहीं है। मुहावरा वही सही है जो अर्थ के *दोनों* भाग व्यक्त करे।

Final Answer: घर बैठे गंगा आना

Quick Tip: स्थिति का चित्र मन में बनाइए, कोई बैठा है और लाभ अपने आप चला आया। ऐसा मुहावरा याद कीजिए जिसमें यात्रा किए बिना ही तीर्थ का फल मिल जाए।

• • •

32. 'चकरा जाना' और 'चक्कर में पड़ना' का अर्थ लिखकर इन दोनों मुहावरों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- दो मिलते-जुलते मुहावरों का अंतर स्पष्ट करने का अच्छा तरीका यह है कि दोनों के लिए एक ही परिस्थिति सोची जाए और देखा जाए कि कौन-सा कहाँ बैठता है।
- जहाँ एक बैठे और दूसरा न बैठे, वहीं अंतर खुल जाता है।

Step 1: दोनों के अर्थ अलग-अलग रखिए।
चकरा जाना – घबरा जाना, बुद्धि का काम न करना।
चक्कर में पड़ना – उलझन या धोखे में फँस जाना।

Step 2: एक परिस्थिति लेकर दोनों को आजमाइए।
परिस्थिति – किसी ने ठगी करके पैसे ले लिए।
यहाँ 'वह ठग के चक्कर में पड़ गया' ठीक बैठता है, पर 'वह ठग के चकरा गया' कहना गलत होगा।

Step 3: दूसरी परिस्थिति लेकर आजमाइए।
परिस्थिति – अचानक कठिन प्रश्न सामने आ गया और कुछ सूझा ही नहीं।
यहाँ 'वह चकरा गया' ठीक बैठता है, पर 'वह चक्कर में पड़ गया' से वही भाव नहीं आता।

Step 4: अंतर को एक पंक्ति में समेटिए।
'चकरा जाना' भीतर की स्थिति है, मन का घबरा जाना। 'चक्कर में पड़ना' बाहर की स्थिति है, किसी जाल या उलझन में फँस जाना।

Final Answer: चकरा जाना अर्थात घबरा जाना और कुछ समझ में न आना, चक्कर में पड़ना अर्थात उलझन या धोखे में फँस जाना। पहला भीतर की घबराहट है और दूसरा बाहरी मुसीबत।

Quick Tip: दोनों के अर्थ अलग-अलग लिखिए, फिर एक ही स्थिति में दोनों को रखकर देखिए। एक मन की घबराहट बताता है और दूसरा किसी जाल में फँसना।

• • •

33. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए :

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
  गिरिवर के उर से उठ-उठकर
  उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
  हैं झाँक रहे नीरव-नभ पर
  अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

Correct Answer: —

• • •

34. 'अनिमेष' का अर्थ नहीं है

(A) एकटक

(B) लगातार

(C) निर्निमेष

(D) झाँकना

Correct Answer: (D) झाँकना

SOLUTION:

Concept:

- नकारात्मक प्रश्न का सबसे तेज हल यह है कि विकल्पों को उनकी व्याकरणिक श्रेणी के आधार पर बाँटा जाए।
- जो विकल्प श्रेणी के हिसाब से अलग पड़े, प्रायः वही बेमेल होता है।

Step 1: विकल्पों की श्रेणी देखिए।
एकटक, लगातार और निर्निमेष, ये तीनों बताते हैं कि काम *किस ढंग से* हो रहा है।
झाँकना बताता है कि काम *क्या* हो रहा है। यह अकेला क्रिया है।

Step 2: काव्यांश में दोनों शब्दों की जगह देखिए।
पंक्ति है – हैं झाँक रहे नीरव-नभ पर, अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।
यहाँ 'झाँक रहे' क्रिया है और 'अनिमेष', 'अटल', 'चिंतापर' उस क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।
यदि दोनों का एक ही अर्थ होता, तो कवि उन्हें साथ-साथ न रखता।

Step 3: शब्द की बनावट से पुष्टि कीजिए।
अनिमेष में 'अ' निषेध और 'निमेष' अर्थात पलक झपकना। पूरा अर्थ हुआ, पलक झपकाए बिना। निर्निमेष भी ठीक इसी तरह बना है।

Step 4: उत्तर पर पहुँचिए।
तीन विकल्प ढंग बताते हैं और एक क्रिया है, इसलिए बेमेल विकल्प 'झाँकना' ही उत्तर

है।

Final Answer: (D) झाँकना

Quick Tip: अनिमेष में अ उपसर्ग और निमेष अर्थात पलक झपकना है। अब देखिए कौन-सा विकल्प देखने का ढंग नहीं, बल्कि स्वयं देखने की क्रिया बता रहा है।

• • •

35. पद्यांश में किसकी तुलना मोती की लड़ियों से की गई है?

(A) महाकार पर्वत की

(B) झाग भरे झरने की

(C) निर्मल ताल की

(D) विशाल वृक्ष की

Correct Answer: (B) झाग भरे झरने की

SOLUTION:

Concept:

- तुलना वाले प्रश्न में सबसे पहले तुलना का *आधार* सोचिए, अर्थात दोनों में कौन-सा गुण समान है।
- जिस विकल्प में वह गुण मिले, वही उत्तर होगा।

Step 1: उपमान का गुण पहचानिए।
मोती की लड़ी का अर्थ है मोतियों की माला। उसका गुण है – सफेद, चमकीली और लंबी लटकती हुई।

Step 2: देखिए कि यह गुण किसमें है।
पर्वत विशाल है पर सफेद लड़ी जैसा नहीं। ताल स्थिर और चौड़ा होता है, लटकता

नहीं। वृक्ष हरा और सीधा खड़ा होता है।
पहाड़ से गिरता झागदार झरना ही सफेद, चमकीला और ऊपर से नीचे लटकता दिखाई देता है।

Step 3: काव्यांश से पुष्टि कीजिए।
पंक्ति है – मोती की लड़ियों-से सुंदर झरते हैं झाग भरे निर्झर।
'झाग' शब्द ही सफेदी का संकेत दे रहा है, जो मोती से मेल खाता है।

Step 4: उत्तर दीजिए।
अतः यहाँ झाग भरे झरनों की तुलना मोती की लड़ियों से की गई है।

Final Answer: (B) झाग भरे झरने की

Quick Tip: सोचिए कि मोती की लड़ी कैसी दिखती है, सफेद, चमकीली और लटकती हुई। अब देखिए विकल्पों में कौन-सी वस्तु ऐसी दिखती है।

• • •

36. 'नीरव-नभ' का आशय है

(A) बिना बादल का आकाश

(B) बादलों से भरा आकाश

(C) बादल रहित शांत आकाश

(D) तेज़ हवा से युक्त आकाश

Correct Answer: (C) बादल रहित शांत आकाश

SOLUTION:

Concept:

- जब दो विकल्प आधे-आधे सही लगें, तो वही चुनिए जो शब्द के *दोनों* पदों का भाव समेटता हो।

- अधूरा अर्थ देने वाला विकल्प जान-बूझकर रखा जाता है।

Step 1: पहले स्पष्ट गलत विकल्प हटाइए।
'नीरव' का अर्थ है ध्वनिरहित और शांत। बादलों से भरा आकाश गरजता है और तेज हवा शोर करती है। अतः (B) और (D) दोनों नीरवता के विपरीत हैं और बाहर हो गए।

Step 2: बचे हुए दोनों की तुलना कीजिए।
(A) कहता है बिना बादल का आकाश। (C) कहता है बादल रहित *शांत* आकाश। दोनों में अंतर केवल 'शांत' शब्द का है।

Step 3: तय कीजिए कि 'शांत' आवश्यक है या नहीं।
शब्द का मूल अर्थ ही है रव अर्थात ध्वनि का अभाव। इसलिए शांति इस शब्द का प्राण है, उसे छोड़ा नहीं जा सकता।
(A) केवल बादल की बात करता है, नीरवता छूट जाती है।

Step 4: उत्तर पर पहुँचिए।
पूरा भाव केवल (C) में आता है, इसलिए वही सही है।

Final Answer: (C) बादल रहित शांत आकाश

Quick Tip: नीरव में रव अर्थात ध्वनि छिपी है। ऐसा विकल्प चुनिए जो बादल न होने के साथ-साथ शांति का भाव भी बताए।

• • •

37. पेड़ 'चिंतापर' क्यों दिखाई दे रहे हैं?

(A) वे आकाश जैसी ऊँचाई पाने के लिए विचारमग्न हैं।

(B) पर्वतों की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पा रहे हैं।

(C) पर्वतों से झरने वाले झरनों की गति से भयभीत हैं।

(D) नीरव-नभ का रूप उन्हें आश्चर्यचकित कर रहा है।

Correct Answer: (A) वे आकाश जैसी ऊँचाई पाने के लिए विचारमग्न हैं।

SOLUTION:

Concept:

- काव्य में शब्द आसपास के शब्दों से अर्थ पाते हैं। इसलिए 'चिंतापर' का अर्थ उसके साथ आए शब्दों से जोड़कर देखना चाहिए।
- उसके साथ आए हैं 'उच्चाकांक्षाओं', 'अनिमेष' और 'अटल'।

Step 1: साथ आए शब्दों को पंक्ति में रखिए।
वृक्ष *उच्चाकांक्षाओं* से उठ रहे हैं, *अनिमेष* अर्थात एकटक देख रहे हैं, *अटल* अर्थात स्थिर हैं, और *कुछ चिंतापर* हैं।

Step 2: इन शब्दों का साझा भाव पकड़िए।
ये सब मिलकर भय या आश्चर्य का नहीं, बल्कि एक गहरे और दृढ़ संकल्प का चित्र बनाते हैं। कोई भयभीत प्राणी अटल नहीं रह सकता।

Step 3: इस आधार पर विकल्प काटिए।
(C) भय कहता है और (D) आश्चर्य, दोनों 'अटल' से मेल नहीं खाते। अतः दोनों बाहर।

Step 4: बचे दो में निर्णय कीजिए।
काव्यांश में आकांक्षाएँ वृक्षों की बताई गई हैं, पर्वत की नहीं। इसलिए (B) गलत है। बचता है (A), जो कहता है कि वृक्ष आकाश जैसी ऊँचाई पाने के विचार में डूबे हैं। यही 'उच्चाकांक्षाओं से तरुवर' का सीधा अर्थ है।

Final Answer: (A) वे आकाश जैसी ऊँचाई पाने के लिए विचारमग्न हैं।

Quick Tip: चिंतापर के साथ आए शब्द देखिए, उच्चाकांक्षाओं और अटल। अटल रहने वाला भयभीत नहीं होता, इसलिए भय और आश्चर्य वाले विकल्प पहले हटा दीजिए।

• • •

38. निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों के सही उत्तर चुनकर लिखिए :

कथन : एकाग्रता, अटल विश्वास और लक्ष्य पर दृष्टि सफल होने के सहायक तत्त्व हैं।
कारण : जीवन में सफलता बिना प्रयास के भाग्य से स्वयं ही प्राप्त हो जाती है।

(A) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

(B) कथन और कारण दोनों सहीं हैं।

(C) कथन गलत है, परंतु कारण सही है।

(D) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

Correct Answer: (D) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

SOLUTION:

Concept:

- जब कथन और कारण एक-दूसरे का खंडन करते दिखें, तो दोनों को सही मानने वाला विकल्प तुरंत हटा देना चाहिए।
- उसके बाद केवल यह तय करना बचता है कि दोनों में से सही कौन है।

Step 1: विरोध पहचानिए।
कथन प्रयास की बात करता है, अर्थात एकाग्रता और अटल विश्वास। कारण कहता है कि प्रयास की आवश्यकता ही नहीं, भाग्य से सब मिल जाता है।

दोनों एक साथ सच नहीं हो सकते, इसलिए विकल्प (B) पहले ही बाहर।

Step 2: कथन को काव्यांश से जाँचिए।
वृक्ष अनिमेष अर्थात एकटक, अटल अर्थात दृढ़, और उच्चाकांक्षाओं से भरे हुए बताए गए हैं। यही एकाग्रता और अटल विश्वास का चित्र है। कथन सही सिद्ध हुआ।
अतः विकल्प (A) और (C), जो कथन को गलत मानते हैं, दोनों बाहर।

Step 3: बचा हुआ विकल्प जाँचिए।
केवल (D) बचता है, जो कथन को सही और कारण को गलत मानता है। यही हमारी दोनों जाँचों से मेल खाता है।

Step 4: कारण के गलत होने की पुष्टि कीजिए।
काव्यांश में वृक्ष निष्क्रिय होकर नहीं बैठे, वे उठ-उठकर आकाश की ओर झाँक रहे हैं। यह भाग्य पर भरोसा नहीं, सतत प्रयास का चित्र है।

Final Answer: (D) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

Quick Tip: देखिए कि दोनों वाक्य एक-दूसरे को काट रहे हैं। एक प्रयास की बात करता है और दूसरा कहता है प्रयास की जरूरत ही नहीं।

• • •

39. 'मनुष्यता' कविता के आधार पर लिखिए कि 'अखंड आत्म भाव' रखने के क्या लाभ हैं?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- 'अखंड' अर्थात जो टूटा हुआ न हो। अखंड आत्म भाव अर्थात यह अनुभूति कि आत्मा सब में एक ही है, वह बँटी हुई नहीं है।

- इसका लाभ समझने के लिए देखिए कि इसके अभाव में समाज में क्या-क्या बिगड़ता है।

Step 1: पहले देखिए कि इस भाव के बिना क्या होता है।
जब मनुष्य स्वयं को दूसरों से अलग मानता है, तो जाति, धर्म और वर्ग के भेद खड़े होते हैं, स्वार्थ बढ़ता है और आपसी बैर पनपता है।

Step 2: अब इसका उलटा लाभ लिखिए।
अखंड आत्म भाव आते ही ये सारे भेद ढह जाते हैं, क्योंकि जब सब में एक ही आत्मा दिखेगी तो किसी को नीचा मानने का आधार ही नहीं बचेगा।

Step 3: व्यवहार पर असर देखिए।
दूसरे की पीड़ा अपनी पीड़ा लगने लगती है, इसलिए सहायता स्वाभाविक हो जाती है। कवि का यही आग्रह है कि सबको साथ लेकर चलो और किसी को पीछे मत छोड़ो।

Step 4: अंतिम लाभ बताइए।
ऐसा व्यक्ति केवल अपने लिए नहीं जीता। कवि के अनुसार सच्ची मनुष्यता यही है, और ऐसा जीवन ही अमर होता है, क्योंकि लोग उसके परोपकार को सदा याद रखते हैं।

Final Answer: इस भाव से भेदभाव और स्वार्थ मिटते हैं, दूसरों का दुख अपना लगने लगता है जिससे सहयोग और प्रेम बढ़ता है, समाज एक सूत्र में बँधता है और परोपकारी जीवन सार्थक तथा स्मरणीय बन जाता है।

Quick Tip: अखंड आत्म भाव अर्थात सब में एक ही आत्मा देखना। पहले सोचिए कि इस भाव के बिना समाज में क्या बिगड़ता है, उसका उलटा ही इसका लाभ है।

• • •

40. 'साखी' में कबीर ने प्रभु प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा किसे और क्यों बताया है?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- कबीर की साखियाँ प्रायः विरोधी जोड़ों में बात कहती हैं, जैसे अँधेरा और दीपक, मैं और हरि।
- इन जोड़ों को पकड़ लेने पर उत्तर अपने आप निकल आता है।

Step 1: कबीर का विरोधी जोड़ा पहचानिए।
कबीर कहते हैं कि जब 'मैं' था तब हरि नहीं, अब हरि हैं तो 'मैं' नहीं। यह अहंकार और ईश्वर का जोड़ा है।
दोनों में से एक ही रह सकता है।

Step 2: इसी से बाधा का नाम निकालिए।
चूँकि 'मैं' के रहते हरि नहीं आते, इसलिए सबसे बड़ी बाधा वही 'मैं' है, अर्थात अहंकार।

Step 3: दूसरे जोड़े से कारण समझिए।
कबीर दीपक और अँधेरे का उदाहरण देते हैं। जैसे ही दीपक जलता है, अँधेरा टिक नहीं पाता। वैसे ही ज्ञान और भक्ति का प्रकाश आते ही अहंकार समाप्त हो जाता है। अर्थात अहंकार का बने रहना यही सिद्ध करता है कि भक्ति का प्रकाश अभी आया ही नहीं।

Step 4: व्यावहारिक कारण जोड़िए।
अहंकारी व्यक्ति स्वयं को सबसे ऊपर मानता है, इसलिए वह न सीखता है, न झुकता है, न प्रेम करता है। भक्ति तो पूरी तरह झुक जाने का नाम है, इसलिए अहंकार उसका सबसे बड़ा शत्रु है।

Final Answer: कबीर के अनुसार सबसे बड़ी बाधा अहंकार है, क्योंकि 'मैं' और

'हरि' एक साथ नहीं रह सकते। जैसे दीपक जलते ही अँधेरा मिट जाता है, वैसे ही भक्ति का प्रकाश आते ही अहंकार मिटना आवश्यक है, तभी प्रभु की प्राप्ति होती है।

Quick Tip: कबीर की उस पंक्ति को याद कीजिए जिसमें मैं और हरि के एक साथ न रह पाने की बात है, और दीपक तथा अँधेरे का उदाहरण भी जोड़िए।

• • •

41. 'आत्म त्राण' कविता के संदर्भ में लिखिए कि संकट में अपनों का साथ न मिलने तथा उनसे छले जाने पर भी कवि संकट का सामना कैसे करना चाहता है?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- इस कविता की विशेषता यह है कि यह सामान्य प्रार्थना से अलग है। साधारण भक्त दुख हटाने की माँग करता है, यह कवि दुख सहने का बल माँगता है।
- इसी अंतर को पकड़ लेने पर पूरा उत्तर खुल जाता है।

Step 1: पहले बताइए कि कवि क्या नहीं माँगता।
वह यह नहीं माँगता कि विपदाएँ उसके जीवन में आएँ ही नहीं, और न ही यह कि ईश्वर आकर उसे संकट से निकाल दें।

Step 2: अब बताइए कि वह क्या माँगता है।
वह केवल यह माँगता है कि विपदा में उसे भय न हो और वह उसे सहन कर सके। यही कविता का शीर्षक **आत्म त्राण** अर्थात स्वयं की रक्षा सार्थक करता है।

Step 3: अपनों के छोड़ने पर उसका रुख देखिए।
यदि दुख की रात में सब उसे छोड़ दें और कोई सहायता करने वाला न बचे, तब भी वह चाहता है कि उसका आत्मबल बना रहे और वह स्वयं पर संदेह न करे।

Step 4: छल किए जाने पर उसका रुख देखिए।
अपनों के धोखा देने पर भी वह चाहता है कि मन में कड़वाहट न भरे। वह किसी को दोष नहीं देना चाहता, बल्कि अपने भीतर धैर्य बनाए रखना चाहता है और बिना सिर झुकाए आगे बढ़ना चाहता है।

Final Answer: कवि संकट हटाने की नहीं, संकट सहने की शक्ति माँगता है। अपनों के साथ छोड़ देने और छल करने पर भी वह चाहता है कि उसका विश्वास बना रहे, मन में कटुता न आए, और वह अपने आत्मबल तथा धैर्य के सहारे बिना झुके संकट का सामना करे।

Quick Tip: ध्यान रखिए कि कवि दुख दूर करने की प्रार्थना नहीं करता। वह दुख सहने की शक्ति माँगता है, यही कविता का मूल भाव है।

• • •

42. 'कर चले हम फ़िदा' कविता से उद्धृत 'राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- कवि यहाँ एक रूपक रच रहा है, अर्थात वर्तमान की स्थिति को रामायण के पात्रों में ढाल रहा है।
- रूपक खोलने के लिए यह देखना चाहिए कि आज कौन किसके स्थान पर है।

Step 1: रूपक के पात्र बिठाइए।
सीता के स्थान पर है **भारत माता**, रावण के स्थान पर है **देश का शत्रु**, और राम-लक्ष्मण के स्थान पर हैं **देश के सैनिक**।

Step 2: अब पंक्ति को इस रूपक से पढ़िए।
'राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों' का अर्थ हुआ कि हे साथियो, मातृभूमि की रक्षा का वही दायित्व जो कभी राम-लक्ष्मण ने निभाया था, अब तुम्हारा है।

Step 3: रूपक का प्रभाव समझिए।
इस तुलना से सैनिक का कार्य केवल युद्ध न रहकर धर्म का कार्य बन जाता है। जो काम मर्यादा पुरुषोत्तम ने किया, वही आज सैनिक कर रहा है, यह भाव बहुत बड़ा बल देता है।

Step 4: गीत के समग्र भाव से जोड़िए।
पूरा गीत बलिदान और कर्तव्य का है। मरते सैनिक चाहते हैं कि उनके बाद भी यह परंपरा न रुके, इसीलिए वे साथियों को राम और लक्ष्मण कहकर उत्तरदायित्व सौंपते हैं।

Final Answer: कवि यहाँ भारत माता को सीता, शत्रु को रावण और सैनिकों को राम-लक्ष्मण के रूप में देखता है। पंक्ति का आशय है कि जैसे राम-लक्ष्मण ने सीता की रक्षा की थी, वैसे ही अब सैनिकों को मातृभूमि की रक्षा करनी है, यह उनका पवित्र कर्तव्य है।

Quick Tip: रूपक खोलिए, सीता के स्थान पर कौन है, रावण के स्थान पर कौन और राम-लक्ष्मण के स्थान पर कौन। फिर पंक्ति का अर्थ अपने आप स्पष्ट हो जाएगा।

• • •

43. निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा परिवार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिलजुलकर रहते थे, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है। बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है। बारूद की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। अब गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं। नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था और यह नमूना इतना डरावना था कि बंबई निवासी डरकर अपने-अपने पूजा-स्थल में अपने खुदाओं से प्रार्थना करने लगे थे।

Correct Answer: –

• • •

44. अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर देने का आशय है –

(A) धरती पर ऊँची-ऊँची इमारतों का निर्माण

(B) धरती को देश की सीमाओं में बाँधना

(C) प्रकृति के अन्य जीवों और तत्त्वों से दूरी

(D) बुद्धि-बल से प्रकृति को नियंत्रित करना

Correct Answer: (C) प्रकृति के अन्य जीवों और तत्त्वों से दूरी

SOLUTION:

Concept:

- लाक्षणिक शब्द का अर्थ उसके ठीक पहले और ठीक बाद की पंक्तियों से निकलता है।
- दीवार का काम है दो चीजों को अलग करना, इसलिए पूछिए कि यहाँ अलग कौन हुआ।

Step 1: दीवार के मूल काम से शुरू कीजिए।
दीवार जोड़ती नहीं, अलग करती है। अतः इस वाक्य में अलगाव की बात हो रही है, निर्माण या नियंत्रण की नहीं।
इससे विकल्प (A) और (D) कमजोर पड़ जाते हैं।

Step 2: पहले की पंक्ति देखिए।
वहाँ पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत और समंदर की बराबर हिस्सेदारी बताई गई है। अर्थात सब एक साथ थे।

Step 3: बाद की पंक्तियाँ देखिए।
वहाँ बताया गया है कि समंदर पीछे सरकाया गया, पेड़ रास्तों से हटाए गए, पंछी बस्तियों से भगाए गए।
जो साथ थे, वे अब अलग कर दिए गए। यही वह दीवार है।

Step 4: देश की सीमाओं वाला भ्रम हटाइए।
विकल्प (B) देश की सीमाओं की बात करता है, पर पूरे गद्यांश में राजनीतिक सीमाओं का कोई उल्लेख नहीं है। गद्यांश का विषय मानव और प्रकृति का संबंध है।

Final Answer: (C) प्रकृति के अन्य जीवों और तत्त्वों से दूरी

Quick Tip: दीवार का काम अलग करना है। पहले वाली पंक्ति देखिए जिसमें सबकी बराबर हिस्सेदारी बताई गई है, फिर सोचिए कि दीवार किनके बीच खड़ी हुई।

• • •

45. बंबई निवासी ईश्वर से प्रार्थना क्यों करने लगे?

(A) ईश्वर की प्रार्थना करना उनका दैनिक कर्म था।

(B) प्रार्थना करके वे अपने-अपने पूजा-स्थलों को बचा सकते थे।

(C) वे अपने तरीके से अपने प्रार्थना की शक्ति परखना चाहते थे।

(D) प्रकृति के कोप को देखकर उन्हें अपना अस्तित्व संकट में लगा।

Correct Answer: (D) प्रकृति के कोप को देखकर उन्हें अपना अस्तित्व संकट में लगा।

SOLUTION:

Concept:

- मनुष्य ईश्वर को तब सबसे अधिक याद करता है जब उसे लगे कि स्थिति उसके अपने बस से बाहर हो गई है।
- इसी मनोविज्ञान से उत्तर तुरंत मिल जाता है।

Step 1: स्थिति की गंभीरता देखिए।
गद्यांश नेचर के गुस्से को 'इतना डरावना' बताता है। यह सामान्य बारिश या हवा की बात नहीं, एक भयावह आपदा की बात है।

Step 2: लोगों की प्रतिक्रिया देखिए।
वे अपने-अपने पूजा-स्थल में गए और अपने खुदाओं से प्रार्थना करने लगे। जब मनुष्य के सारे साधन छोटे पड़ जाते हैं, तभी वह इस तरह ईश्वर की शरण लेता है।

Step 3: कारण को शब्द दीजिए।
इसका अर्थ यह है कि उन्हें अपना जीवन और अस्तित्व ही खतरे में दिखाई दिया। यही (D) कह रहा है।

Step 4: शेष विकल्प हटाइए।
(A) इसे रोज की आदत बताता है, जबकि गद्यांश इसे असाधारण घटना के रूप में

प्रस्तुत करता है।
(B) और (C) दोनों में ऐसी बातें हैं जो गद्यांश में कही ही नहीं गईं, इसलिए वे अनुमान भर हैं।

Final Answer: (D) प्रकृति के कोप को देखकर उन्हें अपना अस्तित्व संकट में लगा।

Quick Tip: गद्यांश में डरकर शब्द पर ध्यान दीजिए। सोचिए कि लोग किस स्थिति में इस तरह सामूहिक रूप से प्रार्थना करने लगते हैं।

• • •

46. निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों से सही उत्तर चुनकर लिखिए :

कथन : मानव और प्रकृति के बीच बढ़ते असंतुलन का मुख्य कारण मानव की बढ़ती स्वार्थपरता है।
कारण : बुद्धि के विकास ने ही मानव को अच्छे-बुरे का ज्ञान करवाया जिससे अंततः पर्यावरण सकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ।

(A) कथन और कारण दोनों गलत हैं।
(B) कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।
(C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।
(D) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

Correct Answer: (C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।

SOLUTION:

Concept:

- ऐसे प्रश्नों में अकसर एक ही शब्द पूरा अर्थ पलट देता है। ऐसे शब्दों को पहचानना आवश्यक है।
- यहाँ वह शब्द है 'सकारात्मक'।

Step 1: कारण को अंत से पढ़िए।
कारण का निष्कर्ष है कि पर्यावरण सकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ, अर्थात पर्यावरण का भला हुआ।

Step 2: गद्यांश से इसकी तुलना कीजिए।
गद्यांश की सूची देखिए – ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान, नित नए रोग।
यह भला होने का नहीं, भारी नुकसान का चित्र है। इसलिए कारण गलत है और विकल्प (B) तथा (D) दोनों बाहर हो गए।

Step 3: अब कथन पर निर्णय लीजिए।
बचे हुए विकल्प (A) और (C) में अंतर केवल कथन को लेकर है। गद्यांश में मानव द्वारा समंदर पीछे सरकाना, पेड़ हटाना और प्रदूषण फैलाना स्पष्ट लिखा है, जो स्वार्थपरता ही है।
अतः कथन सही है और (A) भी बाहर।

Step 4: उत्तर की पुष्टि कीजिए।
केवल (C) बचता है, जो कथन को सही और कारण को गलत व्याख्या बताता है।

Final Answer: (C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।

Quick Tip: कारण के अंतिम शब्द सकारात्मक पर ध्यान दीजिए। गद्यांश में गिनाए गए परिणामों को देखिए और सोचिए कि वे अच्छे हैं या बुरे।

• • •

47. प्रकृति के असंतुलन का परिणाम नहीं है

(A) मौसम चक्र में परिवर्तन

(B) विकास-दर में वृद्धि

(C) प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ोतरी

(D) नए-नए रोगों की उत्पत्ति

Correct Answer: (B) विकास-दर में वृद्धि

SOLUTION:

Concept:

- नकारात्मक प्रश्न में विकल्पों को अच्छे और बुरे में बाँटने से उत्तर तुरंत दिख जाता है।
- असंतुलन का परिणाम कभी अच्छा नहीं होता।

Step 1: विकल्पों को दो भागों में बाँटिए।
मौसम चक्र में परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ोतरी और नए रोगों की उत्पत्ति, तीनों हानिकारक हैं।
विकास-दर में वृद्धि एक अच्छी बात मानी जाती है।

Step 2: तर्क लगाइए।
प्रश्न असंतुलन के *परिणाम* पूछ रहा है। असंतुलन से नुकसान होता है, लाभ नहीं। इसलिए अच्छी बात वाला विकल्प ही बेमेल है।

Step 3: गद्यांश से पुष्टि कीजिए।
गद्यांश की सूची है – ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान, नए रोग। इनमें कहीं विकास-दर नहीं है।

Step 4: भूमिका का अंतर समझिए।
अंधाधुंध विकास असंतुलन का कारण बन सकता है, पर वह असंतुलन का परिणाम

नहीं है। प्रश्न में कारण और परिणाम का यही अंतर परखा जा रहा है।

Final Answer: (B) विकास-दर में वृद्धि

Quick Tip: विकल्पों को अच्छे और बुरे में बाँटिए। असंतुलन का परिणाम हानिकारक ही होगा, इसलिए जो विकल्प लाभदायक लगे वही उत्तर है।

• • •

48. 'पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था' – का भाव है

(A) पहले संसार परिवार की सीमाओं में नहीं बँटा था।

(B) पहले संसार में अलग-अलग देश ही नहीं थे।

(C) पहले लोग मानव और प्रकृति के संबंधों से अनजान थे।

(D) पहले के लोग सह-अस्तित्व का सम्मान करते थे।

Correct Answer: (D) पहले के लोग सह-अस्तित्व का सम्मान करते थे।

SOLUTION:

Concept:

- भाव पूछने वाले प्रश्न में वह विकल्प चुनना चाहिए जो पूरे गद्यांश के मूल विषय से मेल खाता हो।
- इस गद्यांश का मूल विषय है मानव और प्रकृति का बिगड़ता संबंध।

Step 1: गद्यांश का मूल विषय तय कीजिए।
पूरा गद्यांश इसी बात पर है कि पहले मानव प्रकृति के साथ मिलकर रहता था और अब उसने दीवारें खड़ी कर ली हैं।

Step 2: इस विषय से मेल खाता विकल्प ढूँढ़िए।
सह-अस्तित्व का अर्थ ही है साथ-साथ रहना। यही गद्यांश की पहली पंक्ति में बराबर

की हिस्सेदारी के रूप में कहा गया है।
अतः (D) विषय से पूरी तरह मेल खाता है।

Step 3: विषय से भटके विकल्प हटाइए।
(B) राजनीतिक देशों की बात करता है और (C) कहता है कि लोग अनजान थे। दोनों गद्यांश के विषय से बाहर हैं, क्योंकि गद्यांश तो पुराने समय की प्रशंसा कर रहा है।

Step 4: निकटतम गलत विकल्प से बचिए।
(A) कहता है कि संसार बँटा नहीं था। यह बात सही दिशा में है पर अधूरी है, क्योंकि केवल न बँटना और आदरपूर्वक साथ रहना, दोनों एक बात नहीं हैं।
गद्यांश में मिलजुलकर रहने और बराबर हिस्सेदारी का भाव है, इसलिए सम्मान वाला विकल्प अधिक सटीक है।

Final Answer: (D) पहले के लोग सह-अस्तित्व का सम्मान करते थे।

Quick Tip: सह-अस्तित्व का अर्थ है साथ-साथ रहना। गद्यांश की पहली पंक्ति में सबकी बराबर हिस्सेदारी वाली बात से इसे जोड़िए।

• • •

49. वामीरो के बार-बार इंकार और उपेक्षा के बाद भी तताँरा उससे अपना गाना पूरा करने का आग्रह करता रहा, यहाँ तक कि उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। वर्तमान में यदि कोई ऐसा करे तो क्या आप उसे उचित मानेंगे?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- ऐसे प्रश्न में सबसे अच्छा उत्तर वह होता है जो दोनों पक्ष देखे, अर्थात पात्र की भावना भी और सामने वाले का अधिकार भी।
- उसके बाद स्पष्ट रूप से अपना मत रखना चाहिए।

Step 1: तताँरा के पक्ष को समझिए।
तताँरा के मन में कोई बुरा भाव नहीं था। वह वामीरो के गीत से मोहित था और उसका आग्रह भावुकता से निकला था, छल या दुर्भावना से नहीं।

Step 2: अब वामीरो के पक्ष को देखिए।
वामीरो ने बार-बार इंकार किया और उपेक्षा दिखाई। इसका सीधा अर्थ है कि वह यह आग्रह नहीं चाहती थी।
जब कोई मना कर चुका हो, तो उसकी इच्छा ही अंतिम होनी चाहिए।

Step 3: दोनों पक्षों को तौलिए।
भावना अच्छी होने से व्यवहार अपने आप उचित नहीं हो जाता। रास्ता रोककर खड़े हो जाना दूसरे व्यक्ति के लिए दबाव और असुरक्षा पैदा करता है, चाहे इरादा कुछ भी रहा हो।

Step 4: अपना मत स्पष्ट रूप से लिखिए।
इसलिए आज के संदर्भ में यह व्यवहार उचित नहीं ठहराया जा सकता। यदि तताँरा अपनी बात एक बार कहकर रुक जाता और वामीरो के निर्णय का सम्मान करता, तो वही सही आचरण होता।

Final Answer: तताँरा की भावना में छल नहीं था, फिर भी उसका व्यवहार आज उचित नहीं माना जाएगा। किसी के स्पष्ट इंकार के बाद भी आग्रह करते रहना और रास्ता रोकना दूसरे पर दबाव डालना है। सम्मान वही है जहाँ सामने वाले के इंकार को भी स्वीकार किया जाए।

Quick Tip: अपना मत स्पष्ट लिखिए और कारण भी दीजिए। ध्यान रखिए कि भावना अच्छी होने भर से व्यवहार उचित नहीं हो जाता, सामने वाले की सहमति भी आवश्यक है।

• • •

50. 'गिन्नी का सोना' पाठ पाठकों को एक जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। कथन के पक्ष में अपने विचार लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- यह दिखाने के लिए कि कोई पाठ नागरिक बनने की प्रेरणा देता है, उसमें से वे बातें निकालनी चाहिए जो पाठक के *आचरण* को बदलती हों।
- केवल कहानी सुना देने से कथन सिद्ध नहीं होता।

Step 1: पाठ किस सोच को चुनौती देता है, यह देखिए।
पाठ उन लोगों की सोच पर प्रश्न उठाता है जो कहते हैं कि आदर्श अच्छे तो हैं पर व्यवहार में नहीं चलते। ऐसी सोच व्यक्ति को निष्क्रिय बना देती है।

Step 2: पाठ बदले में क्या मार्ग सुझाता है, यह बताइए।
पाठ का रूपक कहता है कि जैसे शुद्ध सोने में थोड़ा ताँबा मिलाकर गहना बनाया जाता है, वैसे ही आदर्श में थोड़ी व्यावहारिकता मिलाकर उसे जीवन में उतारा जा सकता है।
गांधी जी ने यही किया, उन्होंने व्यावहारिकता को पहचाना पर आदर्श को नीचे नहीं गिरने दिया।

Step 3: इसका सीधा असर नागरिक के आचरण पर दिखाइए।
इससे पाठक समझता है कि समाज में सुधार केवल भाषण से नहीं, अपने छोटे-छोटे कामों से होता है। यही सक्रियता है।

Step 4: चेतावनी वाला पक्ष भी जोड़िए।
पाठ यह भी बताता है कि जो केवल अपना लाभ देखते हैं, वे समाज को गिराते हैं। इस चेतावनी से पाठक जागरूक बनता है और अपने निर्णयों को समाज की दृष्टि से भी तौलने लगता है।

Final Answer: पाठ पाठक को निष्क्रिय आदर्शवाद से निकालकर व्यावहारिक सक्रियता की ओर ले जाता है और केवल लाभ-हानि देखने वाली सोच से सावधान करता है। इसी कारण यह जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने की प्रेरणा देता है।

Quick Tip: शुद्ध सोने और गिन्नी के सोने वाले रूपक से शुरू कीजिए, फिर बताइए कि पाठ आदर्शों को व्यवहार में उतारने और केवल अपना लाभ न देखने की सीख कैसे देता है।

• • •

51. 'तीसरी कसम' जैसी साहित्यिक और कलात्मक फ़िल्मों की व्यावसायिक सफलता संदिग्ध क्यों हो जाती है?

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- फ़िल्म एक साथ कला भी है और व्यापार भी। जब ये दोनों उद्देश्य टकराते हैं, तभी यह समस्या खड़ी होती है।
- इसी टकराव को क्रम से खोलने पर उत्तर पूरा बनता है।

Step 1: दोनों उद्देश्यों का अंतर बताइए।
व्यापारिक फ़िल्म का लक्ष्य है अधिक से अधिक टिकट बिकवाना। कलात्मक फ़िल्म का लक्ष्य है जीवन की सच्चाई और संवेदना को ईमानदारी से दिखाना।
दोनों के रास्ते अलग हो जाते हैं।

Step 2: दर्शक के स्तर पर टकराव देखिए।
सामान्य दर्शक फ़िल्म में मनोरंजन और चमक-दमक ढूँढ़ता है। 'तीसरी कसम' जैसी फ़िल्म उसे धीमी और गंभीर लगती है, इसलिए वह भीड़ नहीं जुटा पाती।

Step 3: बाजार के स्तर पर टकराव देखिए।
वितरक अपना पैसा जोखिम में नहीं डालना चाहता। जब उसे लगता है कि फ़िल्म भीड़ नहीं खींचेगी, तो वह उसे खरीदता ही नहीं। शैलेंद्र को इसी कठिनाई का सामना करना पड़ा था।
प्रचार और अच्छे सिनेमाघर भी इसी कारण नहीं मिलते।

Step 4: अंतिम विडंबना बताइए।
ऐसी फ़िल्में पुरस्कार जीतती हैं और वर्षों बाद सराही जाती हैं, पर अपने समय में घाटे में रहती हैं। 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक मिला, फिर भी वह व्यावसायिक रूप से असफल मानी गई।

Final Answer: कला और व्यापार के उद्देश्य अलग-अलग होने के कारण ऐसा होता है। दर्शक मनोरंजन चाहता है, वितरक जोखिम नहीं लेना चाहता, प्रचार नहीं मिलता, और इसी कारण उत्कृष्ट फ़िल्म भी कमाई की कसौटी पर पीछे रह जाती है।

Quick Tip: कला और व्यापार के अलग-अलग उद्देश्यों से शुरू कीजिए, फिर दर्शक की पसंद, वितरक का जोखिम और प्रचार की कमी को कारण के रूप में लिखिए।

• • •

52. 'डायरी का एक पन्ना' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रतीकात्मक समारोह एवं घटनाएँ भी सच्ची भावनाओं को जन्म दे सकती हैं।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- भावना सच्ची है या नहीं, यह परखने की कसौटी यह है कि लोग उसके लिए क्या कीमत चुकाने को तैयार हैं।
- इस पाठ में वह कीमत बहुत बड़ी थी, इसीलिए भावना सच्ची सिद्ध होती है।

Step 1: पहले बताइए कि आयोजन प्रतीकात्मक ही था।
26 जनवरी 1931 को कोई सरकार नहीं बदली, कोई कानून नहीं बना। केवल झंडा फहराया गया और स्वाधीनता की प्रतिज्ञा पढ़ी गई। व्यावहारिक रूप से कुछ नहीं बदला।

Step 2: अब देखिए कि लोगों ने इसके लिए क्या सहा।
पुलिस ने लाठियाँ चलाईं, लोग घायल हुए, गिरफ्तारियाँ हुईं। स्त्रियाँ, जो उस समय प्रायः घरों तक सीमित थीं, जुलूस लेकर सड़कों पर निकलीं और मार सहन की।

Step 3: दोनों बातों को जोड़िए।
जिस आयोजन से तुरंत कोई लाभ नहीं था, उसके लिए लोग चोट और जेल तक स्वीकार कर रहे थे। यह तभी संभव है जब भावना भीतर से सच्ची हो।

Step 4: व्यापक निष्कर्ष दीजिए।
प्रतीक अपने आप में छोटा होता है, पर वह किसी बड़े भाव से जुड़ जाए तो वही भाव उसे शक्ति दे देता है। झंडा, प्रतिज्ञा और सभा, इन्हीं प्रतीकों ने पूरे शहर को एक कर दिया।

Final Answer: उस दिन कुछ भी व्यावहारिक रूप से नहीं बदला, फिर भी लोग लाठियाँ और गिरफ्तारियाँ सहने को तैयार थे, स्त्रियाँ तक आगे आईं। इससे स्पष्ट है कि प्रतीकात्मक आयोजन भी लोगों के भीतर सच्ची और प्रबल भावनाएँ जगा सकते हैं।

Quick Tip: पहले बताइए कि 26 जनवरी 1931 का आयोजन प्रतीकात्मक ही था, फिर लिखिए कि लोगों ने उसके लिए लाठियाँ और गिरफ्तारियाँ तक सहीं, जो सच्ची भावना का प्रमाण है।

• • •

53. 'जिनसे अपनापन मिले, अपने वे ही होते हैं फिर चाहे वे अलग परिवार, जाति, धर्म के ही क्यों न हों।' – 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर इस कथन के पक्ष में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- कथन के पक्ष में लिखने का सबसे प्रभावी तरीका तुलना है, अर्थात यह दिखाना कि जहाँ अपनापन मिलना चाहिए था वहाँ नहीं मिला और जहाँ से अपेक्षा नहीं थी वहाँ मिला।
- पाठ इसी तुलना पर टिका है।

Step 1: पहली ओर, जहाँ से अपनापन मिलना चाहिए था।
टोपी का अपना परिवार, अपनी दादी, अपनी माँ, अपने भाई और अपना ही धर्म।
नियम से तो सारा स्नेह यहीं से मिलना चाहिए था।
पर वास्तव में उसे यहाँ डाँट, उपेक्षा और उपहास ही मिला।

Step 2: दूसरी ओर, जहाँ से अपेक्षा नहीं थी।
इफ़्फ़न का परिवार दूसरे धर्म का था और इफ़्फ़न की दादी का टोपी से कोई रक्त-संबंध नहीं था। फिर भी उन्होंने उसे भरपूर स्नेह दिया, उसकी बातें सुनीं और उसे अपनापन दिया।

Step 3: टोपी की अपनी बात से प्रमाण दीजिए।
टोपी ने स्वयं कहा था कि वह अपनी दादी के बदले इफ़्फ़न की दादी को लेना चाहता है। एक बच्चा तभी ऐसा कहता है जब उसे सचमुच किसी से गहरा जुड़ाव हो।

Step 4: निष्कर्ष तक पहुँचिए।
दोनों पक्षों की तुलना बता देती है कि रिश्ता जन्म से नहीं बनता, बल्कि उस व्यवहार से बनता है जो हमें मिलता है। दादी के निधन पर टोपी का अकेलापन इसी सच्चाई का

प्रमाण है।

Final Answer: टोपी को अपने ही घर में अपनापन नहीं मिला और दूसरे धर्म की इफ़्फ़न की दादी से भरपूर स्नेह मिला। यही तुलना कथन को सिद्ध करती है कि अपने वही होते हैं जिनसे अपनापन मिले, चाहे उनका परिवार, जाति या धर्म कुछ भी हो।

Quick Tip: तुलना करके लिखिए। एक ओर टोपी को अपने घर में मिली उपेक्षा और दूसरी ओर इफ़्फ़न की दादी से मिला स्नेह, और उसका दादी बदलने वाला कथन भी जोड़िए।

• • •

54. 'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक और उन जैसे परिवारों की अपने बच्चों को पढ़वाने में अरुचि के क्या कारण रहे होंगे? क्या वर्तमान में भी बच्चों की पढ़ाई को लेकर समान दृष्टिकोण है? अपने विचार के पक्ष में तर्कपूर्ण उत्तर लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- ऐसे प्रश्न में उत्तर को दो कालखंडों में बाँटकर लिखना चाहिए, पहले तब और फिर अब।
- अंत में स्पष्ट मत और उसका कारण देना आवश्यक है, तभी उत्तर तर्कपूर्ण कहलाएगा।

Step 1: उस समय की सोच को समझिए।
उन परिवारों के लिए सबसे बड़ा प्रश्न रोज की रोटी का था। जो बच्चा खेत में हाथ बँटा सकता था, उसे स्कूल भेजना उन्हें घाटे का सौदा लगता था।
शिक्षा का फल वर्षों बाद मिलता है, और इतनी लंबी प्रतीक्षा करने की स्थिति उनके पास नहीं थी।

Step 2: स्कूल की ओर से भी कारण देखिए।
पाठ में मास्टर प्रीतमचंद की कठोर पिटाई का वर्णन है, जिससे बच्चे डरकर स्कूल से भागते थे। साथ ही किताबों और कपड़ों का खर्च भी भारी पड़ता था।
अर्थात न घर से प्रेरणा थी और न स्कूल से आकर्षण।

Step 3: अब आज की स्थिति से तुलना कीजिए।
आज नौकरी और उन्नति दोनों शिक्षा से जुड़ गई हैं, इसलिए माता-पिता स्वयं बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं। शिक्षा का अधिकार कानून, मुफ्त पुस्तकें, मध्याह्न भोजन और छात्रवृत्तियों ने आर्थिक बाधा घटाई है।
शारीरिक दंड पर रोक से स्कूल का भय भी कम हुआ है।

Step 4: अपना मत तर्क के साथ रखिए।
मेरे विचार से दृष्टिकोण बहुत बदला है, क्योंकि आज शिक्षा को बोझ नहीं, अवसर माना जाता है। पर यह परिवर्तन सब जगह समान नहीं है।
जहाँ आज भी अत्यधिक गरीबी है, वहाँ बच्चे बीच में पढ़ाई छोड़कर काम पर लग जाते हैं।

Final Answer: उस समय की अरुचि के पीछे आर्थिक तंगी, शिक्षा से तुरंत लाभ न दिखना और स्कूल का कठोर वातावरण था। आज सोच काफी बदल चुकी है क्योंकि शिक्षा उन्नति का साधन बन गई है और सरकारी सुविधाएँ भी मिलती हैं, फिर भी गरीबी वाले क्षेत्रों में यह समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।

Quick Tip: उत्तर को दो भागों में बाँटिए, पहले उस समय के कारण जैसे गरीबी और मास्टर की पिटाई, फिर आज की बदली स्थिति, और अंत में अपना मत कारण सहित लिखिए।

• • •

55. ठाकुरबारी में महंत जी की नियुक्ति अस्थायी थी फिर भी उन्होंने हरिहर काका की ज़मीन को ठाकुर जी के नाम करवाने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाए। उनके द्वारा किए जाने वाले इन कृत्यों के पीछे के संभावित कारणों का उल्लेख कीजिए।

Correct Answer: –

SOLUTION:

Concept:

- किसी पात्र के कृत्यों के कारण खोजने के लिए यह देखना चाहिए कि उस काम से उसे क्या-क्या मिलता।
- महंत जी को इससे धन, शक्ति और सुरक्षा तीनों मिलतीं।

Step 1: पहला लाभ, धन।
हरिहर काका के पास पंद्रह बीघे ज़मीन थी। वह ठाकुरबारी के नाम हो जाती तो उसकी उपज और आय पर नियंत्रण महंत जी का ही रहता, क्योंकि ठाकुर जी स्वयं तो कुछ भोगते नहीं।

Step 2: दूसरा लाभ, शक्ति और प्रतिष्ठा।
गाँव में जिसके पास अधिक ज़मीन, उसका दबदबा अधिक। ठाकुरबारी की संपत्ति बढ़ने से महंत जी का प्रभाव और लोगों पर पकड़ दोनों मजबूत होते।

Step 3: तीसरा लाभ, अपने पद की सुरक्षा।
नियुक्ति अस्थायी थी। यदि वे ठाकुरबारी की संपत्ति बढ़ा देते, तो स्वयं को अपरिहार्य सिद्ध कर पाते और उन्हें हटाना कठिन हो जाता। इसीलिए उन्हें जल्दी भी थी।

Step 4: यह सब संभव क्यों लगा, यह बताइए।
गाँव वालों की गहरी धार्मिक आस्था के कारण ठाकुरबारी के विरुद्ध कोई बोलता नहीं था। इसी कारण महंत जी ने पहले मीठी बातें कीं, भोजन कराया, फिर अपहरण करके जबरन कागजों पर हस्ताक्षर और अंगूठे लगवाने का प्रयास किया।
धर्म का आवरण उनके अपराध को ढँक देता था।

Final Answer: इन कृत्यों के पीछे धन का लोभ, गाँव में प्रभाव और प्रतिष्ठा बढ़ाने की चाह, अस्थायी पद के कारण जल्दी से जल्दी लाभ उठाने और अपनी स्थिति

मजबूत करने की इच्छा, तथा लोगों की धार्मिक आस्था का सहारा लेकर बच निकलने का भरोसा, ये कारण रहे होंगे।

Quick Tip: सोचिए कि ज़मीन ठाकुरबारी के नाम होने से महंत जी को क्या-क्या मिलता, धन, प्रभाव और पद की सुरक्षा। साथ ही यह भी कि धार्मिक आस्था उनके लिए ढाल कैसे बनी।

• • •

56. आप उत्कर्ष/प्रगति हैं। वर्तमान में तेज़ी से बदलते परिप्रेक्ष्य में किशोरों को आजीविका (करियर) संबंधी मार्गदर्शन की नितांत आवश्यकता है। इस विषय पर आधारित शृंखला शुरू किए जाने का निवेदन करते हुए दूरदर्शन निदेशालय को लगभग 80 शब्दों में एक ई-मेल लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- औपचारिक ई-मेल में सबसे अधिक अंक प्रारूप और विषय-वस्तु के हैं, इसलिए दोनों पर समान ध्यान देना चाहिए।
- एक अच्छा ई-मेल तीन प्रश्नों का उत्तर देता है – समस्या क्या है, समाधान क्या हो, और उससे लाभ क्या होगा।

Step 1: विषय पंक्ति सबसे पहले लिखिए।
विषय ऐसा हो कि पढ़ते ही पूरा उद्देश्य समझ आ जाए, जैसे – किशोरों हेतु करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आरंभ करने का निवेदन।
लंबा विषय लिखने की आवश्यकता नहीं।

Step 2: समस्या को ठोस रूप में रखिए।
केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि मार्गदर्शन चाहिए। बताइए कि नए क्षेत्र तेजी से बन रहे हैं और छोटे शहरों तथा गाँवों में सही जानकारी नहीं पहुँचती।

Step 3: समाधान स्पष्ट और व्यावहारिक रखिए।
बताइए कि कार्यक्रम कैसा हो, जैसे साप्ताहिक शृंखला जिसमें विशेषज्ञ आएँ और विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर दें। अस्पष्ट सुझाव प्रभाव नहीं छोड़ते।

Step 4: लाभ बताकर बात पूरी कीजिए।
अंत में यह अवश्य लिखिए कि इससे किसे और कैसे लाभ होगा, तभी निवेदन में वजन आता है।

Final Answer:
प्रेषक : pragati.student@email.com
प्रेषिती : directorate@doordarshan.gov.in
विषय : किशोरों हेतु करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आरंभ करने का निवेदन

महोदय,

बदलते समय के साथ रोजगार के अनेक नए क्षेत्र सामने आए हैं, किंतु अधिकांश किशोरों तक उनकी सही जानकारी नहीं पहुँच पाती। छोटे शहरों और गाँवों के विद्यार्थी इस कमी से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

अतः निवेदन है कि दूरदर्शन पर एक साप्ताहिक करियर मार्गदर्शन शृंखला आरंभ की जाए, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ विद्यार्थियों के प्रश्नों का समाधान करें। इससे अनेक विद्यार्थी सही दिशा चुन सकेंगे।

कृपया इस सुझाव पर विचार करने की कृपा करें।

धन्यवाद,
प्रगति

Quick Tip: ई-मेल का प्रारूप पूरा लिखिए, प्रेषक, प्रेषिती, विषय, संबोधन, मुख्य भाग और नाम। मुख्य भाग में पहले समस्या, फिर सुझाव और अंत में लाभ बताइए।

• • •

57. 'जाड़े की शाम थी। आज रोज़ की तुलना में कोहरा अधिक ही घना था। मैं अपनी नृत्य-कक्षा से लौट रहा था।' ..... – पंक्ति को आधार बनाकर लगभग 100 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- लघुकथा लिखने का सरल ढाँचा है – वातावरण, घटना, निर्णय, और अंत में प्रभाव।
- इसी क्रम में चलने से कथा छोटी भी रहती है और पूरी भी लगती है।

Step 1: वातावरण, जो पहले से दिया गया है।
जाड़े की शाम, घना कोहरा, सूनी सड़क और अकेला लौटता पात्र। इसे ज्यों का त्यों रखिए और एक-दो वाक्य से थोड़ा और गहरा कर दीजिए।

Step 2: घटना, जो कथा को मोड़ दे।
कोहरे में कुछ ऐसा दिखे जो पात्र को रुकने पर मजबूर कर दे। जैसे सड़क किनारे रोता हुआ एक छोटा बच्चा।

Step 3: निर्णय, जहाँ पात्र का चरित्र खुलता है।
यहाँ भीतर का द्वंद्व दिखाइए, कि आगे बढ़ जाऊँ या रुकूँ। यही द्वंद्व कथा में जान डालता है।

Step 4: प्रभाव, अर्थात कथा का संदेश।

अंत में एक पंक्ति ऐसी हो जो घटना से आगे बढ़कर कोई बड़ी बात कह दे।

Final Answer:
शीर्षक : घर का रास्ता

जाड़े की शाम थी। आज रोज़ की तुलना में कोहरा अधिक ही घना था। मैं अपनी नृत्य-कक्षा से लौट रहा था। अचानक किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। पास जाकर देखा तो एक छह-सात साल का बच्चा सिकुड़ा बैठा था। वह रास्ता भूल गया था और डर के मारे काँप रहा था। घड़ी देखी, देर हो चुकी थी। एक क्षण मन डगमगाया, फिर मैंने उसका हाथ थाम लिया। पूछते-पूछते हम उसके घर पहुँचे। दरवाजा खुला और उसकी माँ ने उसे सीने से लगा लिया। लौटते हुए कोहरा उतना ही घना था, पर रास्ता मुझे पहले से कहीं अधिक साफ लग रहा था।

Quick Tip: दी गई पंक्ति से ही शुरुआत कीजिए, एक ही घटना लीजिए, बीच में पात्र का द्वंद्व दिखाइए और अंत में कोई संदेश देने वाली पंक्ति रखिए। शीर्षक देना न भूलिए।

• • •

58. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :

परिश्रम सफलता की कुंजी है
संकेत बिंदु : सूक्ति का अर्थ • विद्यार्थी जीवन में महत्त्व • वर्तमान में इसकी आवश्यकता क्यों

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- अनुच्छेद में सबसे अधिक अंक तब मिलते हैं जब तीनों संकेत-बिंदु स्पष्ट रूप से दिखाई दें, भले ही उपशीर्षक न लिखा जाए।

- इसलिए हर बिंदु को तीन-चार पंक्तियाँ दे दीजिए।

Step 1: आरंभ रोचक बनाइए।
सीधे परिभाषा से शुरू करने के बजाय एक छोटा उदाहरण या प्रश्न रखिए, जिससे पाठक जुड़ जाए।

Step 2: अर्थ को उदाहरण से खोलिए।
चाबी और ताले का उदाहरण दीजिए। फिर किसी परिचित तथ्य से जोड़िए, जैसे यह कि बड़ी उपलब्धियाँ वर्षों के अभ्यास से बनती हैं, एक दिन में नहीं।

Step 3: विद्यार्थी जीवन से जोड़िए।
बताइए कि बुद्धि कितनी भी तेज हो, बिना अभ्यास के वह काम नहीं आती, और साधारण बुद्धि वाला विद्यार्थी भी परिश्रम से आगे निकल जाता है।

Step 4: वर्तमान संदर्भ और निष्कर्ष।
आज की प्रतिस्पर्धा और ध्यान भटकाने वाले साधनों की चर्चा कीजिए, और अंत में एक सशक्त पंक्ति से अनुच्छेद समाप्त कीजिए।

Final Answer:
परिश्रम सफलता की कुंजी है

कोई भी बड़ी उपलब्धि एक दिन में नहीं मिलती। कुंजी का अर्थ है चाबी, और इस सूक्ति का आशय यह है कि सफलता रूपी बंद द्वार केवल परिश्रम की चाबी से ही खुलता है। भाग्य भी उसी का साथ देता है जो प्रयास करता है। विद्यार्थी जीवन में इसका महत्त्व सबसे अधिक है, क्योंकि तीव्र बुद्धि भी अभ्यास के बिना व्यर्थ हो जाती है, जबकि सामान्य बुद्धि वाला विद्यार्थी निरंतर परिश्रम से बहुत आगे निकल जाता है। वर्तमान समय में तो इसकी आवश्यकता और भी बढ़ गई है। हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा तीव्र है और मोबाइल तथा मनोरंजन के साधन निरंतर ध्यान भटकाते रहते हैं। ऐसे में जो अपना समय संभालकर परिश्रम करता है, वही सफल होता है। सच यही है कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं।

Quick Tip: तीनों संकेत-बिंदुओं को क्रम से लीजिए, सूक्ति का अर्थ, विद्यार्थी जीवन में महत्त्व, और आज की आवश्यकता। एक ही अनुच्छेद में लिखिए, बिंदु मत बनाइए।

• • •

59. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :

भीड़ भरे बाज़ार का दृश्य
संकेत बिंदु : चारों तरफ लोगों की गरमागरमी • दुकानदारों की आवाज • खरीद-फरोख़्त करते लोग

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- वर्णनात्मक अनुच्छेद में इंद्रियों का क्रम से प्रयोग करने पर चित्र अधिक जीवंत बनता है।
- पहले जो दिखता है, फिर जो सुनाई देता है, फिर जो महसूस होता है, इस क्रम से लिखिए।

Step 1: जो दिखाई देता है, उससे आरंभ कीजिए।
सिर ही सिर दिखती भीड़, सजी हुई दुकानें, रंग-बिरंगी वस्तुएँ, लटकते कपड़े और ठेलों पर रखे फल। यह दृश्य का ढाँचा बना देता है।

Step 2: अब जो सुनाई देता है, वह जोड़िए।
दुकानदारों की ऊँची पुकार, ग्राहकों का मोल-भाव, बच्चों की जिद, हॉर्न की आवाजें। इससे दृश्य में जान आ जाती है।

Step 3: अब जो महसूस होता है, वह लिखिए।

भीड़ का धक्का, गरमाहट, थकान और साथ ही उत्सव जैसा उत्साह। यही तीसरा स्तर वर्णन को गहरा बनाता है।

Step 4: अंत में अपना भाव जोड़िए।
एक पंक्ति में लिखिए कि इस सारे कोलाहल के बीच आपको क्या अनुभव हुआ। इससे अनुच्छेद पूरा लगता है।

Final Answer:
भीड़ भरे बाज़ार का दृश्य

रविवार की शाम थी और बाज़ार में सिर ही सिर दिखाई दे रहे थे। दुकानें रंग-बिरंगी वस्तुओं से सजी थीं और ठेलों पर फल-सब्जियाँ करीने से लगी थीं। चारों तरफ लोगों की गरमागरमी थी, कहीं भीड़ में धक्का-मुक्की हो रही थी तो कहीं दाम को लेकर बहस। दुकानदार गला फाड़कर अपनी वस्तुएँ पुकार रहे थे, कोई सस्ते दाम बता रहा था तो कोई अच्छी गुणवत्ता का भरोसा दिला रहा था। इन आवाजों में बच्चों की जिद और वाहनों के हॉर्न भी मिल रहे थे। लोग खरीद-फरोख़्त में डूबे थे, कोई कपड़े देख रहा था तो कोई तौल करवा रहा था। भीड़ की गरमाहट और थकान के बावजूद सबके चेहरों पर उत्सव जैसा उत्साह था। लौटते हुए लगा कि बाज़ार केवल खरीदने-बेचने की जगह नहीं, जीवन के मेले जैसा है।

Quick Tip: यह वर्णन है, तर्क नहीं। पहले जो दिखता है, फिर जो सुनाई देता है, फिर जो महसूस होता है, इसी क्रम से लिखिए और तीनों संकेत-बिंदु अवश्य लाइए।

• • •

60. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :

ऑनलाइन भुगतान की सुविधा
संकेत बिंदु : भुगतान करने का नया तरीका • देश की अर्थव्यवस्था में सहायक • सावधानी अपेक्षित

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- किसी सुविधा पर अनुच्छेद लिखते समय संतुलन आवश्यक है, अर्थात लाभ भी और सावधानी भी।
- संकेत-बिंदु स्वयं यही संतुलन माँग रहे हैं, इसलिए तीनों को बराबर स्थान दीजिए।

Step 1: पहले बताइए कि क्या बदला।
पहले हर काम के लिए नकद चाहिए था, बैंक की कतार में लगना पड़ता था और खुले पैसे की समस्या रहती थी। अब मोबाइल से ही सब कुछ हो जाता है।
यह तुलना बदलाव को स्पष्ट कर देती है।

Step 2: फिर बताइए कि देश को क्या मिला।
हर लेनदेन का लेखा-जोखा बनने से पारदर्शिता आई और कर-चोरी घटी। छोटे व्यापारी भी बैंकिंग व्यवस्था से जुड़े, जिससे उन्हें ऋण मिलना आसान हुआ।

Step 3: अब दूसरा पहलू रखिए।
ऑनलाइन ठगी, फर्जी लिंक और ओटीपी माँगने वाले फोन कॉल इसी सुविधा के साथ आए हैं। इनसे अनेक लोगों को नुकसान उठाना पड़ा है।

Step 4: व्यावहारिक सुझाव देकर समाप्त कीजिए।
किसी को पिन या ओटीपी न बताएँ, केवल विश्वसनीय ऐप का प्रयोग करें और सार्वजनिक वाई-फाई पर भुगतान न करें। इससे अनुच्छेद उपयोगी बन जाता है।

Final Answer:
ऑनलाइन भुगतान की सुविधा

कुछ वर्ष पहले तक हर छोटी खरीद के लिए नकद आवश्यक था और बैंक में लंबी कतारें लगती थीं। आज मोबाइल से क्यूआर कोड स्कैन करते ही भुगतान पूरा हो जाता है। यह भुगतान का बिलकुल नया तरीका है, जिसमें न खुले पैसे की समस्या है और न समय की बरबादी। देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी यह सहायक है, क्योंकि हर लेनदेन का रिकॉर्ड बनने से पारदर्शिता बढ़ती है, कर-चोरी घटती है और छोटे दुकानदार भी बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ जाते हैं। किंतु इसके साथ सावधानी अपेक्षित है। ऑनलाइन ठगी के मामले तेजी से बढ़े हैं। इसलिए किसी अनजान लिंक पर क्लिक न करें, अपना पिन या ओटीपी किसी को न बताएँ और सार्वजनिक वाई-फाई से भुगतान करने से बचें। सतर्क रहकर प्रयोग करने पर यह सुविधा जीवन को बहुत सरल बना देती है।

Quick Tip: तीनों संकेत-बिंदुओं को बराबर स्थान दीजिए। केवल लाभ गिनाकर मत रुकिए, तीसरा बिंदु सावधानी का है, इसलिए व्यावहारिक सुझाव भी लिखिए।

• • •

61. निम्नलिखित विषय पर लगभग 100 शब्दों में औपचारिक पत्र लिखिए :

आप दसवीं कक्षा के विद्यार्थी शोभा/शोभित हैं। विद्यालय में योग की कक्षाओं की नियमित व्यवस्था हेतु प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- औपचारिक पत्र में अंक दो चीजों से मिलते हैं, सही प्रारूप और सही विषय-वस्तु। दोनों में से एक भी छूटे तो अंक कटते हैं।
- भाषा में विनम्रता होनी चाहिए, माँग का स्वर नहीं।

Step 1: प्रारूप का ढाँचा पहले बना लीजिए।

सेवा में, पदनाम, विद्यालय का नाम और स्थान, फिर विषय, फिर महोदय, फिर मुख्य भाग, फिर सधन्यवाद, और अंत में नाम, कक्षा तथा दिनांक।
यह ढाँचा बनाकर ही लिखना आरंभ कीजिए।

Step 2: मुख्य भाग को तीन अनुच्छेदों में बाँटिए।
पहला अनुच्छेद परिचय और निवेदन का, दूसरा कारण और लाभ का, तीसरा प्रार्थना और धन्यवाद का।

Step 3: कारण को ठोस बनाइए।
केवल यह लिखना कि योग अच्छा होता है, पर्याप्त नहीं। बताइए कि विद्यार्थी घंटों बैठकर पढ़ते हैं, जिससे थकान और तनाव होता है, और योग से एकाग्रता तथा स्वास्थ्य दोनों सुधरते हैं।

Step 4: सुझाव व्यावहारिक रखिए।
यह लिखना कि सप्ताह में तीन दिन प्रातःकाल आधे घंटे की कक्षा हो, अधिक व्यावहारिक लगता है और स्वीकार किए जाने की संभावना भी बढ़ाता है।

Final Answer:
सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदया,
अ.ब.स. विद्यालय,
जयपुर

विषय : विद्यालय में योग की नियमित कक्षाएँ आरंभ करवाने हेतु निवेदन

महोदया,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा की छात्रा शोभा हूँ। समस्त विद्यार्थियों की ओर से मैं एक आवश्यक निवेदन प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

पाठ्यक्रम के बोझ के कारण हमें कई घंटे लगातार बैठकर पढ़ना पड़ता है। इससे

शारीरिक थकान के साथ मानसिक तनाव भी बढ़ता है और एकाग्रता घटती है। यदि विद्यालय में योग की नियमित कक्षाएँ आरंभ हो जाएँ तो हमारा स्वास्थ्य सुधरेगा, मन शांत रहेगा और परीक्षा का भय भी कम होगा।

अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि सप्ताह में तीन दिन प्रातःकाल आधे घंटे की योग कक्षा की व्यवस्था कराई जाए। इसके लिए हम सब आपके अत्यंत आभारी होंगे।

सधन्यवाद

आपकी आज्ञाकारी शिष्या
शोभा
कक्षा दसवीं 'ब'
दिनांक : 7 मार्च 2026

Quick Tip: औपचारिक पत्र का पूरा प्रारूप लिखिए, सेवा में से लेकर दिनांक तक। मुख्य भाग को तीन अनुच्छेदों में बाँटिए, परिचय, कारण-लाभ और प्रार्थना।

• • •

62. निम्नलिखित विषय पर लगभग 100 शब्दों में औपचारिक पत्र लिखिए :

आप शोभा/शोभित हैं। अपने क्षेत्र में पेय जल के बढ़ते संकट की ओर ध्यान दिलाने के लिए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- संपादक के नाम पत्र तभी प्रभावी होता है जब उसमें समस्या केवल गिनाई न जाए, बल्कि उसका असर भी दिखाया जाए।

- असर दिखाने के लिए ठोस ब्यौरे देने चाहिए, अस्पष्ट शिकायत से काम नहीं चलता।

Step 1: प्रारूप पहले तय कीजिए।
सेवा में, संपादक महोदय, समाचार-पत्र का नाम और पता, विषय, महोदय, मुख्य भाग, सधन्यवाद, भवदीय या भवदीया, नाम, पता और दिनांक।

Step 2: आरंभ में माध्यम का उल्लेख कीजिए।
पहली पंक्ति में ही लिखिए कि आप समाचार-पत्र के माध्यम से अधिकारियों का ध्यान दिलाना चाहते हैं। यही इस पत्र की पहचान है।

Step 3: समस्या को ब्यौरे के साथ रखिए।
केवल 'पानी की समस्या है' लिखने से बात नहीं बनती। लिखिए कि कितने दिन से पानी नहीं आता, पानी की गुणवत्ता कैसी है, हैंडपंप की क्या स्थिति है और लोगों को कितनी दूर जाना पड़ता है।

Step 4: माँग स्पष्ट और सीमित रखिए।
दो-तीन ठोस माँगें रखिए, जैसे नियमित आपूर्ति, पाइपलाइन की मरम्मत और पानी की जाँच। बहुत सारी माँगें एक साथ रखने से पत्र कमजोर पड़ जाता है।

Final Answer:
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक समाचार,
लखनऊ

विषय : हमारे क्षेत्र में गहराते पेय जल संकट की ओर ध्यान दिलाने हेतु

महोदय,

आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं नगर निगम तथा जल विभाग का ध्यान हमारे क्षेत्र की गंभीर समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

गत तीन महीनों से हमारे मोहल्ले में जल आपूर्ति बहुत अनियमित है। प्रायः एक दिन छोड़कर ही पानी आता है और वह भी मात्र आधे घंटे के लिए। जो पानी आता है उसमें मिट्टी और दुर्गंध रहती है, जिससे बच्चों के बीमार पड़ने की घटनाएँ बढ़ी हैं। भू-जल स्तर गिर जाने से अधिकांश हैंडपंप सूख चुके हैं और महिलाओं को दूर से पानी ढोकर लाना पड़ता है।

अतः निवेदन है कि नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित की जाए, टूटी पाइपलाइनों की मरम्मत कराई जाए और जल की गुणवत्ता की जाँच करवाई जाए।

सधन्यवाद

भवदीय
शोभित
45, आर्य नगर, लखनऊ
दिनांक : 7 मार्च 2026

Quick Tip: संपादक के नाम पत्र में पहली पंक्ति में ही समाचार-पत्र के माध्यम से ध्यान दिलाने की बात लिखिए। समस्या के ठोस ब्यौरे दीजिए और अंत में दो-तीन स्पष्ट माँगें रखिए।

• • •

63. निम्नलिखित विषय पर लगभग 40 शब्दों में विज्ञापन लिखिए :

'स्वदेशी अपनाओ, आत्मनिर्भर बनो' – स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के प्रति जन-जागरूकता के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- अच्छा विज्ञापन तीन काम करता है – ध्यान खींचता है, कारण देता है, और कुछ करने को कहता है।
- तीनों को 40 शब्दों में समेटना ही इस प्रश्न की चुनौती है।

Step 1: ध्यान खींचिए।
सबसे ऊपर बड़े अक्षरों में नारा या प्रश्न रखिए। प्रश्न से शुरू करना विशेष रूप से प्रभावी होता है, क्योंकि पाठक उत्तर सोचने लगता है।

Step 2: कारण दीजिए, पर बहुत संक्षेप में।
दो या तीन बिंदु काफी हैं। हर बिंदु एक पंक्ति का हो और सीधे लाभ बताए, लंबी व्याख्या न हो।

Step 3: नारा जोड़िए।
नारा छोटा, तुकबंद और याद रहने वाला हो। यही विज्ञापन की जान होती है।

Step 4: अंत में स्पष्ट आह्वान दीजिए।
पाठक को बताइए कि अब उसे करना क्या है। साथ ही विज्ञापन को एक बॉक्स में रखिए, ताकि वह विज्ञापन जैसा दिखे।

Final Answer:

क्या आपकी खरीदारी देश को मजबूत बना रही है?

• स्वदेशी वस्तु खरीदिए, देश का पैसा देश में रहेगा
• हमारे कारीगरों और छोटे उद्योगों को मिलेगा सहारा
• आत्मनिर्भर भारत की ओर एक कदम

"स्वदेशी अपनाओ, आत्मनिर्भर बनो"

अगली बार खरीदते समय एक बार लेबल अवश्य देखिए।

Quick Tip: विज्ञापन को बॉक्स में लिखिए। ऊपर बड़ा शीर्षक, बीच में दो-तीन छोटे बिंदु, फिर एक नारा और अंत में पाठक से कुछ करने का आह्वान।

• • •

64. निम्नलिखित विषय पर लगभग 40 शब्दों में विज्ञापन लिखिए :

मिट्टी के बर्तन बनाने वाली कंपनी 'विरासत' की ओर से अपने उत्पादों की जानकारी देने तथा बिक्री बढ़ाने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- व्यावसायिक विज्ञापन में ग्राहक सबसे पहले यह जानना चाहता है कि इसमें उसका क्या लाभ है।
- इसलिए उत्पाद की विशेषता को सीधे ग्राहक के लाभ के रूप में लिखना चाहिए।

Step 1: ऊपर नाम और एक पंक्ति का परिचय दीजिए।
कंपनी का नाम सबसे बड़ा हो और उसके नीचे एक छोटी पंक्ति, जिसे टैगलाइन कहते हैं, जो पूरी बात एक वाक्य में कह दे।

Step 2: विशेषता को ग्राहक के लाभ में बदलिए।
यह लिखना कि बर्तन मिट्टी के हैं, केवल सूचना है। यह लिखना कि बिना फ्रिज के पानी ठंडा रहेगा और बिजली बचेगी, ग्राहक का लाभ है।
इसी तरह हाथ से बने होने को कारीगरों के सहयोग से जोड़िए।

Step 3: उत्पादों की सूची छोटी रखिए।
पाँच-छह वस्तुएँ काफी हैं। लंबी सूची विज्ञापन को भारी बना देती है और शब्द-सीमा भी टूटती है।

Step 4: छूट और संपर्क से समाप्त कीजिए।
कोई आकर्षक प्रस्ताव और संपर्क का तरीका देना आवश्यक है, तभी ग्राहक कदम उठाएगा।

Final Answer:

विरासत

मिट्टी के बर्तन, सेहत का वरदान

• फ्रिज के बिना भी ठंडा पानी, बिजली की बचत
• मिट्टी में पका भोजन, स्वाद और पोषण दोनों
• हर खरीद से मिले गाँव के कुम्हार को रोजगार

घड़ा, सुराही, हांडी, कुल्हड़ एवं सजावटी गमले उपलब्ध

उद्घाटन पर 25% तक की छूट

विरासत मृद्भांड केंद्र, स्टेशन रोड • दूरभाष : 99XXXXXX45

Quick Tip: विज्ञापन में कंपनी का नाम, उत्पादों की छोटी सूची, दो-तीन विशेषताएँ, कोई छूट और संपर्क सूत्र अवश्य दीजिए। विशेषता को ग्राहक के लाभ के रूप में लिखिए।

• • •

65. निम्नलिखित विषय पर लगभग 60 शब्दों में सूचना लिखिए :

आप स्वयंसेवी संस्था 'रोशनी' की/के अध्यक्ष प्रणीति/प्रणीष हैं। 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' के अवसर पर मादक द्रव्यों से होने वाले नुकसान के प्रति आम लोगों को जागरूक करने के लिए संस्था द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। जन साधारण को इस बात की जानकारी देने के लिए एक सूचना तैयार कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- सूचना पढ़ने वाला केवल यह जानना चाहता है कि उसे कहाँ और कब पहुँचना है। इसलिए ये विवरण सबसे स्पष्ट दिखने चाहिए।
- इन्हें अलग पंक्तियों में मोटे अक्षरों में लिखने से सूचना अधिक उपयोगी बनती है।

Step 1: शीर्ष भाग बनाइए।
संस्था का नाम, फिर बीच में 'सूचना' शब्द, और फिर दिनांक। यह सूचना की पहचान है।

Step 2: विषय एक पंक्ति में लिखिए।
विषय पढ़ते ही पता चल जाए कि सूचना किस बारे में है, जैसे मादक द्रव्यों के दुष्प्रभाव पर जागरूकता कार्यशाला।

Step 3: मुख्य विवरण अलग-अलग पंक्तियों में दीजिए।
दिनांक, समय और स्थान को एक ही लंबे वाक्य में न छिपाइए। इन्हें अलग लिखने से पाठक एक नजर में पढ़ लेता है।

Step 4: अंत में संपर्क और हस्ताक्षर दीजिए।
फोन नंबर और नाम-पद लिखना आवश्यक है, अन्यथा सूचना अधूरी मानी जाती है।

Final Answer:

स्वयंसेवी संस्था 'रोशनी'

सूचना

दिनांक : 24 मई 2026

विषय : मादक द्रव्यों के दुष्प्रभावों पर जागरूकता कार्यशाला

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' के अवसर पर संस्था एक कार्यशाला आयोजित कर रही है। इसमें विशेषज्ञ चिकित्सक तंबाकू, गुटखा तथा अन्य नशीले पदार्थों से होने वाली हानियों और नशा छोड़ने के उपायों पर जानकारी देंगे।

दिनांक : 31 मई 2026
समय : सायं 4:00 बजे
स्थान : नगर पुस्तकालय सभागार
प्रवेश निःशुल्क, पूर्व पंजीकरण आवश्यक नहीं।

संपर्क : 99XXXXXX18

प्रणीष
अध्यक्ष, 'रोशनी'

Quick Tip: सूचना में पाँच बातें अवश्य दीजिए, क्या आयोजन है, कब, कहाँ, किसके लिए और संपर्क किससे करें। दिनांक, समय और स्थान अलग-अलग पंक्तियों में लिखिए।

• • •

66. निम्नलिखित विषय पर लगभग 60 शब्दों में सूचना लिखिए :

आप अ.ब.स. विद्यालय के वरिष्ठ विज्ञान अध्यापिका/अध्यापक प्रणीति/प्रणीष हैं। आपके विद्यालय में 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के अवसर पर विज्ञान मेले का आयोजन होने वाला है। इस बारे में सभी विद्यार्थियों को जानकारी देने के लिए एक सूचना तैयार कीजिए।

Correct Answer: —

SOLUTION:

Concept:

- विद्यालय की सूचना में दो भाग होते हैं, पहला जानकारी देने वाला और दूसरा निर्देश देने वाला।
- दोनों भाग होने पर ही सूचना पूरी मानी जाती है।

Step 1: प्रारूप का ऊपरी भाग तैयार कीजिए।
विद्यालय का नाम, बीच में 'सूचना' शब्द, और उसके नीचे दिनांक। यही सूचना की पहचान है।

Step 2: जानकारी वाला भाग लिखिए।
आयोजन का नाम, अवसर और उसमें होने वाली गतिविधियाँ बताइए। विद्यार्थी को यह जानना चाहिए कि उसे वहाँ क्या देखने या करने को मिलेगा।

Step 3: समय और स्थान स्पष्ट कीजिए।
दिनांक, समय और स्थान को अलग-अलग पंक्तियों में मोटे अक्षरों में लिखिए, ताकि वे तुरंत दिखाई दें।

Step 4: निर्देश वाला भाग जोड़िए।
अंत में बताइए कि भाग लेने के लिए क्या करना है, कब तक करना है और किससे संपर्क करना है। फिर नाम और पद लिखकर सूचना समाप्त कीजिए।

Final Answer:

अ.ब.स. विद्यालय, जयपुर

सूचना

दिनांक : 18 फरवरी 2026

विषय : विज्ञान मेले में भागीदारी हेतु

समस्त विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के उपलक्ष्य में विद्यालय में विज्ञान मेला आयोजित किया जा रहा है। मेले में कार्यशील मॉडल प्रदर्शनी, विज्ञान प्रश्नोत्तरी तथा पोस्टर प्रतियोगिता होगी। विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे।

दिनांक : 28 फरवरी 2026
समय : प्रातः 9:30 बजे से
स्थान : विज्ञान प्रयोगशाला एवं खेल प्रांगण

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी 24 फरवरी तक अपनी कक्षा-अध्यापक के माध्यम से नाम भिजवा दें।

प्रणीष
वरिष्ठ विज्ञान अध्यापक

Quick Tip: सूचना के दो भाग रखिए, पहले आयोजन की जानकारी और फिर विद्यार्थियों के लिए निर्देश कि नाम कब तक और किसके पास लिखवाना है।